वर्ष: 16 | अंक : 1 | जनवरी 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश

नव वर्ष 2025 की हार्दिक शुभकामनाएं!
-परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-1
जनवरी, 2025
पौष-माघ, 2081 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947), छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली, नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-।, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह
मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:
कार्यालय: हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074
संपर्क सूत्र-011-26652101/102
मो. नं. : 8800291788, 8800291288
Email: hansloksandesh@gmail.com
Website: www.hanslok.org
Subject to Delhi Jurisdiction
RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

अपने अस्तित्व को जानना ही आध्यात्मिकता

नववर्ष के नवोदित सूर्य के प्रकाश में हमें नये संकल्प के साथ जीवन के उद्देश्यपूर्ण लक्ष्य की ओर प्रतिबद्ध होकर अग्रसर होने की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लक्ष्य हमारे सामने स्पष्ट हो। मनुष्य का मन हमेशा से अपने अस्तित्व के गूढ़ रहस्यों को समझने के लिए उत्सुक रहा है। यह उत्सुकता उसे अध्यात्म की ओर ले जाती है, जिसमें वह अपने अंदर और आसपास की दुनिया के साथ एक गहरा संबंध खोजता है। यह यात्रा चुपचाप और अक्सर अकेले होती है। आध्यात्मिकता की असली तलाश है- अपने अस्तित्व और संसार के साथ एक सही रिश्ते की तलाश। इसमें व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और विश्वासों की गहरी पड़ताल करता है। आध्यात्मिकता में शब्दों को सावधानी पूर्वक चुनने की जरूरत होती है, क्योंकि शब्द ही हैं जो हमारी सोच को आकार देते हैं। हम जिन शब्दों का उपयोग करते हैं, वे हमारे अनुभवों को भी प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, हम 'परमात्मा' शब्द का उपयोग करते हैं, तो हमें यह समझना चाहिए कि यह शब्द क्या दर्शाता है। कई बार, यह शब्द सिर्फ एक अवधारणा की नुमाइंदगी करता है, जो असलियत से अलग होता है। इसलिए असलियत को समझने के लिए हमें खुद की, अपने विचारों की और शब्दों की भी लगातार जांच करते रहनी होगी।

आध्यात्मिकता कोई धर्म या दर्शन नहीं है, बल्कि यह अपने आप को जानने की एक यात्रा है। वास्तविक आध्यात्मिकता व्यक्तिगत होती है। यह एक ऐसी यात्रा है जो हमें स्वयं को स्वीकार करने, अपने अंधेरे पक्षों से सामना करने और अंत में पूर्ण मुक्ति हासिल करने की ओर ले जाती है। लेकिन भीड़ के साथ आध्यात्मिक प्रयास या अभ्यास करना एक सतही और बनावटी नजरिया है। जहाँ लोग धार्मिक-अनुष्ठानों, ध्यान तकनीकों या बनावटी गुरुओं के पीछे भागते हैं। न उनमें कुछ बदलता है, न वे अपने अंदर झांक पाते हैं।। इससे उनका मन और अधिक अशांति और चिंता से भर जाता है। वे सच्चे आध्यात्मिक मार्ग से भटक जाते है। फिर भी वे समझते हैं कि यही सत्य है, जबकि उनका आनंद सतही होता है, क्षणभंगुर होता है। आध्यात्मिकता की प्रक्रिया खुद को जानने, अपनी कमजोरियों को मानने और अपने अंधेरे पक्षों से सामना करने की जरूरत होती है। इसलिए आध्यात्मिक साधक को धार्मिक विश्वासों या परंपराओं से खुद को मुक्त रखते हुए, आत्म-खोज पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। तो आइये, नववर्ष-2025 की मंगल बेला में हम अपने अस्तित्व की खोज में अपने को समर्पित करें, तभी यह वर्ष हमारे लिए मंगलमय बनेगा। ■

आज भी प्रासंगिक हैं : स्वामी विवेकानंद के उपदेश

स्वामी विवेकानंद के उपदेश आज भी हमारे समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं; साथ ही प्रासंगिक भी हैं। वे न केवल एक महान योगी थे, बल्कि एक महान विचारक व समाज सुधारक भी थे। उनका जीवन हमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी संभालने का संदेश देता है।

स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन में जितनी गहरी और व्यापक शिक्षाएं दीं, वे न केवल भारतीय समाज के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए मार्गदर्शक साबित हुई हैं। उनके उपदेशों में आत्मविश्वास, शिक्षा, एकता और सेवा का संदेश प्रमुख रूप से समाया हुआ है। उनका कहना है कि हर व्यक्ति में अपार शक्ति है और अगर वह अपने भीतर के आत्मविश्वास को पहचान ले, तो वह किसी भी कठिनाई को पार कर सकता है। उनका प्रसिद्ध उद्धरण **"उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए"** आज भी युवाओं को प्रेरित करता है। उन्होंने सनातन संस्कृति के वेदांत ज्ञान के आलोक में यह समझाया कि यदि कोई व्यक्ति खुद पर विश्वास करता है और अपने उद्देश्य के प्रति ईमानदार रहता है, तो उसे कोई भी ताकत विकसित होने से रोक नहीं सकती। आज के समय में, जब युवा पीढ़ी आत्म-संदेह और मानसिक दबाव से जूझ रही है, स्वामी विवेकानंद का यह उपदेश अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है। वे कहते थे, **"आपका आत्मविश्वास ही आपकी सफलता की कुंजी है।"** इस प्रकार, उनके विचार हमें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करते हैं और हमें सिखाते हैं कि किसी भी परिस्थिति में आत्मविश्वास बनाए रखना कितना जरूरी है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक और आत्मिक विकास के लिए भी होनी चाहिए। वे कहते थे, **"शिक्षा का असली उद्देश्य एक व्यक्ति को आत्मनिर्भर और समाज के प्रति जिम्मेदार बनाना है।"** उन्होंने हमेशा समझाया कि एक सशक्त समाज की नींव ज्ञान पर टिकी होती है। आधुनिक युग में, जब तकनीकी विकास और शिक्षा प्रणाली में बदलाव आ रहा है, स्वामी विवेकानंद की शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है। उनका दृष्टिकोण हमें यह याद दिलाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का विकास और समाज में योगदान करना होना चाहिए। यही कारण है कि उनका उपदेश आज भी शिक्षा के महत्व को उजागर करता है और हमें अपने जीवन में इसे सही दिशा में लागू करने के लिए प्रेरित करता है। स्वामी जी का यह भी मानना था कि समाज की सेवा ही वास्तविक धर्म है। उन्होंने यह कहा कि **"जो व्यक्ति दूसरों की मदद करता है, वही सच्चा साधक है।"** स्वामी विवेकानंद ने हमेशा समाज के वंचित और कमजोर वर्ग के उत्थान की बात की।

उनका मानना था कि हर व्यक्ति को अपने संकुचित दायरे की सोच से ऊपर उठकर

समाज के लिए कार्य करना चाहिए। आज के समाज में जब व्यस्तता और स्वार्थ की भावना तेज़ी से बढ़ रही है, स्वामी विवेकानंद के उपदेश हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उनका मानना था कि अगर हम अपना जीवन दूसरों की भलाई में लगाते हैं, तो हम सच्चे मानव बन सकते हैं। समाज में सामूहिकता, समानता और भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए उनकी शिक्षाएं आज भी प्रेरणा देने वाली हैं। स्वामी जी का धर्म के प्रति दृष्टिकोण भी अत्यधिक प्रभावशाली था।

उन्होंने हमेशा यह कहा कि धर्म किसी संस्था या परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यक्तिगत अनुभव है। वे मानते थे कि धर्म हमें सत्य, अहिंसा और प्रेम के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। उनका प्रसिद्ध उद्धरण है, **"धर्म वह है जो जीवन को प्रेम, शांति और सौहार्द से भर दे।"** आज भी, जब दुनिया में धार्मिक उन्माद और संघर्ष बढ़ रहे हैं, स्वामी जी का यह उपदेश हमें सिखाता है कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य मानवता की सेवा करना है, न कि केवल धार्मिक पहचान के आधार पर भेदभाव करना।

स्वामी विवेकानंद ने हमेशा भारतीय संस्कृति की महिमा को बढ़ावा दिया और यह बताया कि भारत का आध्यात्मिक ज्ञान दुनिया को शांति और समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन कर सकता है। उन्होंने पश्चिमी दुनिया के सामने भारतीय दर्शन, योग और वेदांत को प्रस्तुत किया और यह सिद्ध किया कि भारतीय संस्कृति में वह क्षमता है जो मानवता के सर्वोत्तम हित में काम कर सकती है। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति केवल भारत के लिए ही नहीं है, बल्कि यह पूरे विश्व के लिए है।

आज जब हम वैश्विक संदर्भ में मानवता, शांति और विकास की बात करते हैं, स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण हमें यह बताता है कि हम अपनी पारंपरिक मान्यताओं और संस्कृति से अपनी शक्ति को पुनः जागृत कर सकते हैं। उनके उपदेश आज भी हमारे जीवन में प्रासंगिक हैं। उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि आत्मविश्वास, शिक्षा, समाज सेवा और मानवता के प्रति जिम्मेदारी ही जीवन का असली उद्देश्य है। आज की युवा पीढ़ी को उनके उपदेशों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद का जीवन और उनके उपदेश हमें यह सिखाते हैं कि सच्ची सफलता केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि हमारे भीतर की शक्ति और समाज के प्रति हमारे योगदान से प्राप्त होती है। स्वामी जी की शिक्षाओं के माध्यम से हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जो आत्मनिर्भर, सशक्त और एकजुट हो, और यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनके उपदेशों को अपने जीवन में आत्मसात करें। स्वामी विवेकानंद का जीवन हमेशा हमारे लिए एक प्रेरणा स्रोत रहेगा। उन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से प्राप्त ज्ञान के आलोक को अपने अनूठे अंदाज में पूरे विश्व में फैलाया; जो हर गुरु भक्त के लिए भी प्रेरणा स्रोत का काम करता है।

स्वामी विवेकानंद जी अपने समय में युवाओं के मार्गदर्शक, सभी वेद एवं धर्मशास्त्रों के ज्ञाता तथा महान अध्यात्मवेता थे। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व कर पूरी दुनिया के ऊपर अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी लोगों को अध्यात्म ज्ञान और सेवा से जोड़ रही है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे।

शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में उनके भाषण की शुरूआत **'मेरे अमेरिकी भाइयों एवं बहनों'** से हुई, जिसने सभी का दिल जीत लिया।

स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी, 1986 में कोलकाता में एक धर्मपरायण परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेन्द दत्त था। नरेन्द बचपन से ही होनहार तथा कुशाग्र बुद्रि के थे। उनके पिता विश्वनाथ दत्त कोलकाता हाइकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे, उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। परिवार में आध्यात्मिक वातावरण के प्रभाव से नरेन्द्र के मन में बचपन से ही धर्म के संस्कार गहरे होते गये। विवेकानंद बड़े समद्रष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की स्थापना की कल्पना की थी जिसमें मानव धर्म का जाति के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद न रहे। आध्यात्मिकवाद बनाम भौतिकवाद के विवाद में पड़े बिना समता के सिद्धान्त का जो आधार विवेकानंद ने दिया, उससे सबल वैदिक आधार शायद ही ढूंढ़ा जा सका। उनकी शिक्षाएं संपूर्ण मानव समाज के लिए आज भी प्रासंगिक और मार्गदर्शक हैं। ■

तंत्र-मंत्र सब झूठ है, मत भरमो संसार

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! अभी आपने संत कबीरदास जी का पद सुना। कबीरदास जी कहते हैं कि जीव! तूने भगवान के भजन के बिना हीरे जैसा अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया। जीव माया में फँसकर मनुष्य शरीर की कद्र को भूल जाता है। वह न तो संतों की शरण में जाकर कल्याण करने वाली भक्ति को पूछता है और न कभी मन में हरि नाम-सुमिरण करने का विचार करता है। वह दिन-रात माया को पाने के लिए ही जुटा रहता है।

जीव अपने सच्चे जीवन-साथी भगवान को भूलकर संसार को रिझाने में अपना सारा समय गंवा देता है। यह संसार सेमल के फूल की तरह बताया है। सेमल के फूलों की सुन्दरता को देखकर तोता इस आस से डाली पर आ बैठता है कि यह फल पकने पर खाऊँगा, परन्तु जब सेमल के डोडे को चोंच मारकर देखता है, तो उसमें से रुई निकलने पर सिर धुन-धुनकर पछताता है। इसी प्रकार जीवरूपी सुआ संसाररूपी वृक्ष पर बैठकर विषयरूपी फलों में सुख-शान्ति की इच्छा करता रहता है। जब विषयों में दुःख-ही-दुःख मिलता है, तो पछताता है और रोता है; परन्तु

अब पछताये होत क्या,
जब चिड़िया चुग गयी खेत।

खेत को जब चिड़ियों ने चुग लिया तो रखवाली करने से या पछताने से लाभ ही क्या? जब मनुष्य शरीर को भजन के बिना बिता दिया, तो अफसोस करने या पछताने से गई आयु वापस लौटकर तो नहीं आती। संत कबीरदास जी का कहना है कि संसार एक दुकान है, जिसमें सभी लोग माल खरीदने और बेचने को आये हैं। जिसने परमात्मा का भजन किया है, उसने तो अपना माल चौगुना कर लिया है, परन्तु जो संसार के नाशवान पदार्थों को पाने की इच्छा करता है, उसने पूँजी को अर्थात् मनुष्य जन्म को गंवाया ही

है। जो भजन नहीं करेगा, उसका यह जन्म भी व्यर्थ चला जायेगा और मरने के बाद उसे चौरासी में जाना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं–

लख चौरासी भरम दिया,
मानुष जन्म पायो।
'नानक' नाम संभाल,
सो दिन नेडे आयो।

लख चौरासी में भ्रमते-भ्रमते भगवान की कृपा से यह मनुष्य जन्म मिला है। समय धीरे-धीरे बीत रहा है, इसलिए भगवान के नाम का सुमिरण करो। संसार माया का लोभी है और यहां पर सब लोग ममतारूपी महल को मजबूत बनाने में लगे हुए हैं। सब माया के कारण ही प्यार करते हैं और मोह के कारण ही मनुष्य माया को जमा करने में लगा रहता है। कोई बिरला ही माया-मोहरूपी भूल-भुलैया के महल को तोड़कर बाहर निकलता है अन्यथा सब उसी में फँसे रहते हैं। बड़े–बड़े बादशाह और सेठ–साहूकार हमारे देखते-देखते संसार से कूच कर गये और भी अनेक लोग धीरे–धीरे चले जा रहे हैं। आखिर वे अपने साथ क्या ले गये? कहने का भाव यह है कि संसार की माया में फँसकर कुछ भी हाथ नहीं लगेगा और अन्त में पछताना ही पड़ेगा। भगवान की भक्ति के लिए यह मनुष्य तन मिला है, इसलिए भक्ति करो। संत कहते हैं–

उठ जाग क्या सुख सोया रे,
काया गढ़ के निवासी।

काया रूपी किले में निवास करने वाले जीव! उठ, जाग और मोह की निद्रा को त्यागकर देख! तेरी पूँजी को पाँच ठग दिन-रात लूट रहे हैं। इसलिए, जागकर भगवान के भजन में लग जा। भजन में कहा है–

सुमिरण बिन गोता खावेगा।
क्या लेकर तू आया जगत में,
क्या लेकर तू जावेगा।
बिन सतनाम के नर्क पड़ेगा,
फिर चौरासी जावेगा।

विचार करो कि तुम इस संसार में माता के गर्भ से क्या लेकर आये थे और मरते समय संसार की कौन-सी चीज लेकर जाओगे। अमृत नाम का सुमिरण किये बिना तो चौरासी में ही जाना पड़ेगा, फिर पछताने से क्या बनेगा। जैसे नदी में डूबने वाला कभी नीचे और कभी ऊपर गोते खाता रहता है, ऐसे ही जन्म–मरण के गोते खाने पड़ेंगे। संत तुलसीदास जी

कहते हैं-

जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना।
श्रवन रंध्र अहिभवन समाना।।
नयनन्हि संत दरस नहीं देखा।
लोचन मोर पंख कर लेखा।।
ते सिर कटु तुंबरि समतूला।
जे न नमत हरि गुरु पद मूला।।
जो नहिं करइ राम गुन गाना।
जीह सो दादुर जीह समाना।।

जिसने मनुष्य तन पाकर इन कानों से हरि की कथा या चर्चा नहीं सुनी, उसके कान सर्पों के बिल के समान हैं, जिसने इन नेत्रों से सन्तों का दर्शन नहीं किया, उसकी आँखें मोर पंख के समान हैं, जो सिर श्री सद्गुरु और सन्तों के चरणों में नहीं झुकता, वह सिर कड़वी तूम्बी के समान है। जिस जिह्वा से राम के गुण नहीं गाये जाते, उसका जो कुछ भी कहना है वह मेढक की टर-टर से अधिक नहीं है। हाथ दान देने को और पैर सत्संग में जाने को मिले हैं। कहने का भाव यह है कि मनुष्य जीवन परमात्मा को पाने के लिए मिला है। परमात्मा लिखने-पढ़ने या विद्या-चातुरी से नहीं मिलते। भगवान तो भक्ति और भाव के भूखे हैं। भगवान ऊँच-नीच को नहीं देखते, वह तो भक्त के हृदय की भावना को देखते हैं कि इसके हृदय में कितनी जगह है।

एक समय नामदेव जी ने रोटी बनाकर रखी, इतने में एक कुत्ता आया और सब रोटियों को उठाकर भाग निकला। नामदेव जी घी की कटोरी को लेकर पीछे-पीछे भागे और कहा- भगवान! रूखी रोटी से तुम्हारा गला छिल जायेगा, लाओ! रोटियों को चुपड़ दूँ। एकान्त देखकर भगवान ने नामदेव जी को दर्शन दिये, इस पर भी नामदेव जी से कहा- नामदेव! तुम गुरु की शरण जाओ, तभी तुमको ज्ञान होगा। नामदेव ने भगवान की आज्ञा मानकर गुरु की शरण लेकर ज्ञान की प्राप्ति की तथा जीवन के परम ध्येय को हासिल किया।

आज कोई कान फाड़ने में, जटा बढ़ाने में, भगवा रंगाने में अथवा दण्ड धारण करने में, कोई गीता-मन्दिर, शिवालय बनवाने में, कोई तीर्थों पर जाकर नहाने में, कोई माला फेरने में, दान देने और पूजा-पाठ करने में कल्याण समझते हैं, पर कल्याण इन बातों से नहीं होगा।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और सिख आदि सभी एक परमात्मा के बनाये हुए हैं। किसी से पूछो तो सभी यही कहेंगे कि हमारा बनाने वाला मालिक एक ही परमात्मा या खुदा है। जब सबका स्वामी एक है, तो उसका नाम भी सबके लिए एक है, परन्तु आज संसार सच्चे नाम को भूलकर ही एक-दूसरे से लड़ रहा है। इन सभी नामों को तो एक बच्चा भी दो या तीन साल का होने पर कहना सीख जाता है। क्या जब हम राम, कृष्ण, ऊँ, खुदा, अल्लाह, गॉड कहना नहीं सीखे, उस समय हमारे लिए भगवान था ही नहीं? आखिर माता के गर्भ में जपने वाले नाम को भी जानना चाहिए, जिसके लिए सब संत-महात्मा कहते हैं कि वह नाम सोलह स्वर, छत्तीस व्यजनों से परे है। वह नाम चाहे कोई जाने या न जाने, परन्तु वह नाम सबके हृदय में है। उस नाम को गुरु के बिना जान भी नहीं सकते।

> संत कबीरदास जी का कहना है कि संसार एक दुकान है, जिसमें सभी लोग माल खरीदने और बेचने को आये हैं। जिसने परमात्मा का भजन किया है, उसने तो अपना माल चौगुना कर लिया है, परन्तु जो संसार के नाशवान पदार्थों को पाने की इच्छा करता है, उसने पूँजी को अर्थात् मनुष्य जन्म को गंवाया ही है।

तन्त्र मन्त्र सब झूठ है,
मत भरमो संसार।
सार शब्द जाने बिना,
कोई न उतरसी पार।।
शब्द बिना सुरति आन्धरी,
कहो कहाँ को जाय।
द्वार न पावे शब्द का,
फिर फिर भटका खाय।।

संत कबीरदास जी कहते हैं कि यदि तुम्हें अपने तन्त्र-मन्त्रों पर अभिमान है, तो तुम ही बताओ कि इनको जपते हुए तुम्हारी सुरति (ख्याल) कहाँ रहती है। जब मन टिकता ही नहीं, तो फिर स्मरण या भक्ति भी नहीं हो सकती। ये सब तन्त्र-मन्त्र झूठे हैं, मानो या न मानो। भक्ति मार्ग में किसी की बुद्धि या चतुराई नहीं चल सकती। जैसे हाथी अंकुश से काबू में आता है, ऐसे ही मन अन्दर के शब्द से, भगवान के नाम सुमिरण से काबू में आता है।

ओंकार निश्चय भया,
सो कर्ता मत जान।
साँचा शब्द गुरुदेव का,
पर्दे में पहचान।।

गुरु महाराज का वह शब्द पर्दे में जाना जाता है। कई आदमी सबके सामने पूछते हैं और कहते हैं कि हमें वह शब्द या नाम क्यों नहीं बताते? परन्तु वह नाम तो हृदय में हैं, बाहर कैसे बताया जावे। भगवान सत्-चित्-आनन्दस्वरूप हैं तो उनका नाम भी सत्-चित् तथा आनन्द का देने वाला है। जब इन बाहरी नामों से आनन्द की प्राप्ति नहीं होती, तो यह आनन्ददायक हैं भी नहीं।

जासु नाम सुमिरत इक बारा।
नर उतरहिं भव सिन्धु अपारा।।

तुलसीदास जी कहते हैं कि उस नाम को एक बार स्मरण करके जीव भगसागर से पार हो जाता है। इन नामों को तो सारी दुनिया गा रही है, क्या इनसे

भला हो भी जायेगा?

सुमिरण सुरत लगाय के,
मुख ते कछु न बोल।
बाहर के पट देय कर,
अन्तर के पट खोल।।

वास्तव में न गुरु के बिना सत्यता का ज्ञान होता है और न ही गुरु के बिना मोक्ष मिलता है।

बलिहारी गुरु आपने,
देवाड़ी सत् बार।
जिन मानुष से देवता कियो,
करत न लागी बार।
जे सौ चन्दा उगवें,
सूरज चढ़इं हजार।
ऐता चान्दन होंदियां,
गुरु बिन घोर अन्धार।।

कबीरदास कहते हैं-

गगन मण्डल के बीच में,
तहाँ झलके नूर।
निगुरा महल न पाइयाँ,
पहुँचेगा गुरु पूर।।

देखो, झूठी बातों में लगने से भला नहीं होगा। इसलिए सच्चे गुरु की शरण में जाकर अन्दर के सच्चे प्रकाश को और अमृत नाम को प्राप्त करो और तन-मन-धन से सेवा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न करके अपने परलोक को सुधारो। इस संसार में सिकन्दर जैसे भी खाली हाथ चले गये, जिसने अनेक बादशाहों का खजाना जमा कर लिया था। फिर तुम ही क्या ले जा सकोगे, जो बिना भक्ति और सेवा के हीरे जैसा जन्म गँवा रहे हो। परमात्मा का भजन करके इसको सार्थक करो। यही कबीरदास जी का कहना है।

भजन बिना बावरे,
तूने हीरा सा जन्म गँवाया।।

देखो! इस फव्वारे की गेंद जिसको पानी की धार सहारा देकर ऊपर ले जाती है, जिससे अधर में टिकी हुई है। इसी प्रकार यदि तुमने भगवान् में सुरति लगाई तो गेंद की तरह आकाश में पहुँच जावोगे। देखो! यह गेंद हवा लगने से गिरती है; इसी प्रकार सांसारिक विषय रूपी हवा जब तुमको अपनी ओर खींचती है और भजन की ओर नहीं लगने देती, तो इसी प्रकार गेंद की तरह तुम भी गिर जाते हो। ठीक यही दशा आज संसार की है, इतना प्रयत्न करने पर भी ऐसी कल्याणकारी सच्ची बात में नहीं लगते। हमने बड़े प्रेम से पर्चे छपवाये थे और अमेरिका, रूस, इंग्लैन्ड, जापान, चीन, बर्मा आदि सब देशों में भेजे थे। हम समझते थे कि लोगों को परमात्मा के जानने की इच्छा होगी, परन्तु आज दुनिया को फुरसत नहीं। यूँ तो कहावत है कि किया हुआ कर्म व्यर्थ नहीं जाता। बहुत से लोग दूर-दूर से आये हुए हैं, विनोबा भावे के सेक्रट्री भी आये हुए हैं और भी कई देशों से कितनों के उत्तर भी आये हैं कि फुरसत नहीं। जब जीते-जी फुरसत नहीं और मरने के पश्चात् कहते हैं कि राम नाम सत है।

> कहने का भाव यह है कि मनुष्य जीवन परमात्मा को पाने के लिए मिला है। परमात्मा लिखने-पढ़ने या विद्या-चातुरी से नहीं मिलते। भगवान तो भक्ति और भाव के भूखे हैं। भगवान ऊँच-नीच को नहीं देखते, वह तो भक्त के हृदय की भावना को देखते हैं कि इसके हृदय में कितनी जगह है।

छूटा स्वांस बिखर गई देही,
ज्यों माला मनका।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि इस दम दा मैंनूँ की भरोसा, आया न आया, यह स्वांस का खेल है। आया दम तो आदम है नहीं जादम है।

मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि यह मनुष्य तन ईश्वर का प्रसाद है, परन्तु सद्गुरु की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है। यह तन जो भगवान की कृपा से मिला है, यह नौका है। जैसे बिना पतवार और मल्लाह के नौका पार नहीं होती, उसी प्रकार भगवान् के नाम और सद्गुरु के बिना पार नहीं हो सकते।

मत कोई भरम भूलो संसारी।
गुरु बिन कोई न उतरसी पारी।।

पढ़ने-लिखने, रूप-रंग, जायदाद या उपाधियों के भ्रम में कोई न भूले! चाहे तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की तलाश भी हो जाये, तो भी बिना गुरु के तर नहीं सकते। नारद वैकुण्ठ में जाते थे, निगुरा होने के कारण वे जहाँ बैठते थे, वह जगह अपवित्र हो जाती थी; उनको भी गुरु करना पड़ा। शुकदेव मुनि जी इतने बड़े ज्ञानी थे, उनको भी राजा जनक को गुरु बनाना पड़ा। यह संसार स्वप्न जैसी माया है, जैसे सोये में स्वप्न सत्य जान पड़ता है और जागने पर मिथ्या है। उसी प्रकार यह संसार शरीर छूटने पर स्वप्नवत् और मिथ्या है। इसलिए मनुष्य जीवन का ध्येय परम प्रकाश को जानना है, जो बिना संत-महात्मा के नहीं जाना जा सकता। आजकल बहुत से संन्यासी दीया बनाते हैं और उसमें बत्ती जलाकर दर्शन कराकर या सवा रुपया लेकर गुरु बन जाते हैं। गुरु किसे कहते हैं? गुरु उसे कहते हैं जो उस परम प्रकाश को दिखावे जिसके लिए रामायण में लिखा है कि-

परम प्रकाश रूप दिन राती।
नहिं चाहिअ कछु दिया घृत बाती।।

केवल कंठी माला देने वाले गुरु नहीं। गुरु वह है जो रचना से परे का ज्ञान दे, जिसको अमृतकथा, सतनाम कहा है। जिसकी महिमा भगवान् राम भी नहीं गा सके, जिसके प्रभाव से गणेश जी सबसे पहले पूजे गये। उसी सतनाम को सद्गुरु महाराज से जानकर जपने से सच्चा भला होगा।

श्री गुरु महाराज जी की सेवा से ही फलीभूत होगा ज्ञान

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भौतिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये हम स्कूल जाते हैं, हमें फीस जमा करानी पड़ती है और स्कूल की ड्रेस सिलवानी पड़ती है। यदि स्कूल की फीस समय पर नहीं देंगे, तो प्रधानाचार्य हमें स्कूल से निकाल देंगे। भगवान का ज्ञान जिससे हमारा कल्याण होगा, उसके बारे में लोग सोचते हैं कि वह हमें बिना प्रयास के ऐसे ही मिल जाये। यदि आत्मज्ञानी संत–महापुरुष की सेवा किये बिना ज्ञान मिल भी जाये और उसके प्रति हमारे अंदर श्रद्धा-भाव नहीं हो, तो उस ज्ञान का हमें कोई लाभ नहीं मिल पायेगा।

एक किसान होता है, वह खेत की जुताई करके उसमें बीज डालता है। उसके बाद निराई-गुड़ाई करता है, उसमें खाद-पानी डालता है, तब कहीं जाकर उसमें अनाज पैदा होता है। वह खेत में समय-समय पर खाद डालेगा, पानी भी देगा, लेकिन यदि उस फसल की वह देखभाल नहीं करेगा, तो उसमें कीड़े भी लग सकते हैं, जिससे फसल नष्ट हो जायेगी और उसको कुछ भी नहीं मिलेगा। आप धान की पौध लगाते हैं, तो कितनी मेहनत के बाद आपको उसकी फसल मिलती है। इसी तरह से यदि हम श्री गुरु महाराज जी की सेवा नहीं करेंगे, तो हमको ज्ञान फलीभूत नहीं होगा। सेवा ही हमें भक्ति मार्ग में आगे बढ़ाती है। सेवा से ही हम ज्ञान मार्ग में चल सकते हैं और सेवा से ही भजन में मन लगता है। सत्संग, सेवा और भजन सभी के लिए बहुत जरूरी है। जितने प्रेम, श्रद्धा एवं भाव से हम गुरु महाराज की सेवा करेंगे, हमें उतना ही अधिक लाभ मिलेगा।

जैसे कार की बैटरी डाउन हो जाती है, तो उसे चार्ज करवाना पड़ता है। इसी तरह से सत्संग से हमारे श्रद्धा-भाव की बैटरी पुन: चार्ज हो जाती है। भक्त लोग कई बार माया से प्रभावित होकर ज्ञान के मार्ग को छोड़ देते हैं, उनको ज्ञान लेकर घर में नहीं बैठना चाहिए, बल्कि जगह-जगह उन्हें सत्संग करना चाहिए। सत्संग प्रचार में यदि हम बाई-महात्माओं का सहयोग नहीं करेंगे, तो ज्ञान-प्रचार का कार्य आगे नहीं बढ़ पायेगा।

जो ज्ञान हमें मिला है, उसमें हमें आगे बढ़ना है, उसका प्रचार भी करना है तथा बाई-महात्माओं को सहयोग देना है, ताकि और लोग भी इस ज्ञान को जानें। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जो ज्ञान को जानकर स्वयं भजन करता है तथा दूसरों को भी इस मार्ग पर लगाता है, उसको मुक्ति अवश्य मिलती है। यह आत्मा का ज्ञान है, जो सबसे उत्तम, अजर और अविनाशी है।

एक बहेलिया कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे साधु महाराज का एक आश्रम मिला, जहाँ पिंजड़े में एक तोता रहता था। वह बोल रहा था कि शिकारी आयेगा, जाल बिछायेगा, दाना डालेगा, फंसना मत। साधु ने बहेलिये से उस तोते को ले जाने के लिए कहा, तो बहेलिया बोला कि महाराज, यह तोता आपका है। मैं इसे ले जाकर क्या करूंगा। जब यह तोता मेरे साथ जंगल में होगा और जाल बिछाकर दाना भी डालूंगा, तो कोई भी तोता मेरे हाथ नहीं आयेगा, क्योंकि यह तोता आपका सिखाया हुआ है। साधु ने कहा कि अरे! यह जो बोलता है, उसका मतलब यह कुछ नहीं जानता है। इतना कहकर साधु ने वह तोता पिंजड़े से छोड़ दिया और उड़ते हुये वह तोता कह रहा था कि शिकारी आयेगा, जाल बिछायेगा, दाना डालेगा, फंसना मत। बहेलिया जब जंगल में अपना जाल बिछाकर दाना डालकर बैठ गया, तो पहले वही तोता बोलता हुआ आया और उस जाल में फंस गया। कई लोग होते हैं, जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, किंतु हमको वही बोलना चाहिए, जो हम कर सकें।

जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! गुरु महाराज जी ने जो ज्ञान दिया है, तुम उसका भजन करो, सुमिरण करो। देखो, अंत समय में सब कुछ तुम्हारा यहीं छूट जायेगा और यह जो ज्ञान है, अन्तिम क्षण तक तुम्हारे साथ रहेगा। ज्ञान को संतों ने सबसे बड़ा धन बताया। मैं देश-विदेश में बहुत जगह गई, सब शान्ति चाहते हैं, हर मनुष्य शान्ति चाहता है। हर मनुष्य कहता है कि मुझे शान्ति चाहिए। अगर पेट भर करके अन्न भी मिल जाये, तब भी मनुष्य असन्तुष्ट रहता है। बहुत से सम्पन्न देश हैं, जहां उनके जरूरत की पूरी चीजें उपलब्ध हैं, लेकिन फिर भी वहाँ के लोग बहुत अशान्त हैं, उनके मन में शान्ति नहीं है। मन की शान्ति के लिए वे भारत देश में ही आते हैं और ज्ञान की तलाश करते हैं।

इतिहास साक्षी है, धर्मशास्त्र साक्षी हैं कि हमेशा भारतभूमि ने ही महापुरुषों को जन्म दिया और इसी भूमि से देश-विदेश में ज्ञान का प्रकाश फैला। आज भारत के लोग अपनी पवित्र भूमि को भूल चुके हैं। इस भूमि में बहुत-सी चीजें बिना एयरकन्डीशन के उगती रहती हैं। बहुत से ऐसे देश हैं जहाँ कि बिना एयरकन्डीशन के कुछ होता ही नहीं है और न ही वहाँ मनुष्य रह सकता है। मनुष्य के लिए कार एयरकन्डीशन चाहिए, मकान एयरकन्डीशन चाहिये, दफ्तर भी एयरकंडीशन चाहिए और एयरपोर्ट भी एयरकंडीशन चाहिये। इस तरह से उन लोगों ने जीवन जीने के साधन बनाये हुए हैं। शरीर को आराम देने के साधन तो उन लोगों ने पूरे कर लिये और उनसे पूछो कि तुम्हें मन की शान्ति है? तो कहते हैं कि मन हमारा बहुत अशान्त है। हम अभी तक शान्ति को प्राप्त नहीं हुए, हमें शांति की तलाश है। राकेटों के द्वारा लोग तीन-तीन, चार-चार महीना आकाश में रह रहे हैं, पर देखो, वहाँ मन की शान्ति नहीं है। आकाश से भी वे लोग हताश होकर आ जाते हैं। इसीलिए संतों ने बताया कि शान्ति तो अपने हृदय के अंदर है। सचमुच ही शान्ति नाम की कहीं कोई वस्तु नहीं है। सन्तों ने कहा कि वास्तव में शान्ति तो अपने हृदय में है। जब तक उस रास्ते को नहीं अपनाओगे, तब तक शान्ति हो ही नहीं सकती। मैंने कोलकाता के लोगों को कहा कि जब बांग्लादेश से लोग भाग-भाग कर आ रहे थे, तब भी मैं यहीं थी। उस समय कितनी बुरी दशा थी, किसी को यह पता नहीं था कि मनुष्य की ऐसी दशा होने वाली है। जब जीव मां के गर्भ में होता है, तब भी भगवान उसे पूरी खुराक पहुँचाता है। क्या बाहर आकर वह इतना निर्दयी बन चुका है जो हमको कोई चीज नहीं देगा? पर देखो, वास्तव में मनुष्य का मन गन्दा हो गया है। मनुष्य माया और मोह में इतना वशीभूत हो गया है कि वह मानव को मानव नहीं समझता है। मनुष्य धीरे-धीरे राक्षस-वृत्ति को अपनाता जा रहा है। इस तरह से देश में शान्ति कैसे होगी? आज संसार में हर मनुष्य दु:खी है, इसमें सुखी कोई नहीं है। न धनवान ही सुखी है और न निर्धन ही सुखी है। निर्धन तो सूखी रोटी खा सकता है, पर धनवान को तो खाने में स्वाद ही नहीं आयेगा। आखिर हमारी ऐसी गति कैसे हुई? जिन रास्तों से शान्ति को प्राप्त करना था, जिन संगठनों से हमको शान्ति प्राप्त होनी थी, उस मार्ग को हमने दूर छोड़ दिया। स्कूलों में बच्चों को अध्यात्म के बारे में नहीं पढ़ाया जाता। तो इस तरह से भाई, भगवान के भजन के बिना जीवन में दु:ख ही दु:ख है, सुख नहीं है। अनेक बार अकाल पड़ता है, भयंकर वर्षा होती है जिससे कि अनाज खत्म हो जाता है। आप बताएँ कि कब से बारिश बन्द हो रही है; किसान के लिए जब बारिश नहीं होगी, तो किसान कहां से कमायेगा और कहाँ से वह तुम लोगों को अनाज सप्लाई करेगा। आज हर क्षेत्र में अशान्ति है, क्योंकि हम भगवान का भजन नहीं करते। इसलिए आपस में प्रेम नहीं, संगठन में एकता नहीं है। संगठन मजबूत नहीं होने से समाज छिन्न-भिन्न

हो जाता है। हमारे गुरु महाराज जी जो ज्ञान देते हैं, मैं सच कहती हूँ कि उससे कितने ही लोगों ने इस जीवन को बदला है। कितने लोग अपने जीवन से हताश हो गये थे। जैसे सूखी खेती में तत्काल पानी पड़ जावे, तब कुछ न कुछ वह खेती हरी हो जाती है, ऐसे ही उनके जीवन फिर से हरे-भरे हो गये हैं। जो लोग अपने सिद्धान्तों के अनुसार नहीं चलते हैं, वे जीवन में दुःख ही पाते हैं। आप लोगों को गुरु महाराज जी ने संत-महात्माओं के द्वारा ज्ञान दिलाया है। क्या तुम उस ज्ञान को खो बैठे हो? तुम्हारे हृदय में भगवान का नाम होते हुए भी दुःखी क्यों हो? तुमने भगवान के नाम में मन को नहीं लगाया। तुम्हारी वृत्तियाँ, तुम्हारा मन बाहर जा रहा है। लोग इस तरह की बातें बनाते हैं कि पता नहीं कब तक वे रिसर्च करते रहते हैं। देखो, एक छोटी क्लास का विद्यार्थी होता है उसको ए.बी.सी.डी. का ज्ञान नहीं या अ आ इ ई का ज्ञान नहीं, तो वह बिना मास्टर के, बिना अध्यापक के नहीं सीख सकता है। गुरु महाराज जी का जो ज्ञान है, सचमुच में इससे बड़ी शान्ति मिलती है। श्री हंस जी महाराज को तुमने देखा होगा, उन्होंने पूरी दुनिया में इस ज्ञान को बाँटा है। वे कहते थे कि मेरे रहते-रहते लाखों लोगों को यह ज्ञान मिल चुका है। पर वास्तव में जब लोगों की करनी देखो, लोगों की कमाई देखो, तो जीरो बटा जीरो। जीवन में और उन्नति तो बहुत कुछ कर लेते हैं, बड़े-बड़े बंगले बना लेते हैं, बड़ी-बड़ी डिग्री हासिल कर लेते हैं, पर जब ज्ञान-मार्ग पर उनको तोलो तो जीरो बटा जीरो। नारी हो या पुरुष, कोई भी हो, वहीं के वहीं रहते हैं। इसलिए वे अपने मार्ग से विचलित हो जाते हैं। जरा-सा भी झटका आता है, जरा-सी भी कोई बात होती है, तो वे डिगने लग जाते हैं। कहते हैं कि हिमालय पर्वत को कोई डिगा नहीं सकता है। एक पर्वत है स्विटजरलैण्ड में, जब मैं उस पर्वत पर गई, तो कहते हैं कि इस पर्वत की उपमा हिमालय पर्वत से की है। उसको भी कोई डिगा नहीं सकता है। मैंने कहा कि क्यों कहते होंगे कि इस पर्वत को कोई डिगा नहीं सकता? तो मैं जब ऊपर पहुँची और मैंने बाहर दूरबीन से देखा, तो इतनी आँधी, इतनी तूफान, इतनी बर्फ उसमें पड़ रही थी, पर उस पर्वत को कोई डिगा नहीं सका। मतलब न जाने कितनी सदियों से उस पर बर्फ पड़ रही है, सदियों से उसमें आँधी-तूफान आते हैं, लेकिन हिमालय पर्वत की तरह एक ही जगह पर वह अडिग है। इसी तरह हमारे हिमालय को कहते हैं कि कोई शक्ति उसे हिला नहीं सकती। जैसे पतिव्रता नारी को अधर्मी पुरुष डिगा नहीं सकता है, ऐसे ही उन पर्वतों की उपमा दी है। इसी तरह भक्त को भी पर्वत की उपमा दी है कि उसे भी कोई डिगा नहीं सकता है। गुरु महाराज जी ज्ञान देते हैं, किसका ज्ञान कराते हैं? भगवान का ज्ञान कराते हैं। देखो, इतने बड़े-बड़े मन्दिर बने हैं, इनमें किसकी पूजा होती है, भगवान की पूजा होती है। महापुरुषों ने किसका ज्ञान कराया? भगवान का ज्ञान कराया। भगवान के कितने बड़े-बड़े मन्दिर हैं, आप बताइये? जगह-जगह विशाल मन्दिर बने हैं और उनकी सब जगह पूजा होती रहती है। अनादि काल से मंदिरों में भगवान की पूजा होती आ रही है।

> जिन रास्तों से शान्ति को प्राप्त करना था, जिन संगठनों से हमको शान्ति प्राप्त होनी थी, उस मार्ग को हमने दूर छोड़ दिया। स्कूलों में बच्चों को अध्यात्म के बारे में नहीं पढ़ाया जाता। तो इस तरह से भाई, भगवान के भजन के बिना जीवन में दुःख ही दुःख है, सुख नहीं है।

महान उसको कहते हैं जो स्वयं को माया से सुरक्षित रखता है। तो इसी तरह से मनुष्य बड़ा अशान्ति का जीवन व्यतीत कर रहा है। इसलिए शान्ति कहाँ से आयेगी? अपने हृदय से शान्ति आयेगी। इसलिए उन महान पुरुषों के सिद्धान्तों पर चलो। जिन महान पुरुषों ने सचमुच ही दूसरों की भलाई के लिये बड़ी-बड़ी कुर्बानी की है। तो उन महान पुरुषों के आदर्शों पर चलो। देखो, मेरा तो यह कहना है, मैं तुमसे यह कहती हूँ कि अपने धर्म से चिपट कर रहो। अपने धर्म में ही रहो। पर धारण क्या करना है? द्रौपदी का भी तो कोई धर्म रहा होगा, पर धारण तो उसे करना है जो रक्षा करता है। जैसे द्रौपदी ने भगवान के नाम को धारण करके स्वयं पाण्डव और कौरव के बीच में अपनी रक्षा की। तो उसको कहते हैं धर्म, जो माँ जानकी ने राक्षसों के बीच रह करके, अशोक वाटिका में रह करके, जंगल के बीच रह करके, स्वयं अपने धर्म की, स्वयं अपनी रक्षा की। इसलिए कहते हैं धर्म तो रक्षा करता है। धर्म तो धारण करने की चीज है। जब हम अपनी माता के गर्भ में थे, तब हमारा क्या धर्म रहा होगा? जब हम यहाँ से चले जायेंगे, तब हमारा क्या धर्म रहेगा? कहा है-

न हिन्दू बनाया न मुसलमान बनाया।
खुदा ने सिर्फ एक इन्सान बनाया।।

हम सब मानव हैं और मानव के अन्दर, जीने की शक्ति सबके अन्दर एक है। इसलिए उस शक्ति को जानो, वही हमारा वास्तविक धर्म है। वही शक्ति हमारी रक्षा करेगी।

स्वर्ग-नरक से पार ले जाते हैं सद्गुरु महाराज

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! आप लोग काफी देर से सत्संग और भजनों का आनन्द ले रहे हैं। गुरु महाराज की आज्ञा में ही भक्त का कल्याण होता है। उन युग पुरुष श्री हंस जी महाराज की महिमा ही निराली है, जिन्होंने संसार में आकर मनुष्य को ऐसा ज्ञान का रास्ता दिखाया, जिससे वह मानव से महामानव बन गया। संसार में जन्म तो अनेक व्यक्तियों का होता है, लेकिन अनादि काल से यही परम्परा चली आ रही है कि जिन्होंने ज्ञान प्रचार में अपने आपको समर्पित कर दिया, उनको लोग युगों-युगों तक याद रखते हैं। योगिराज श्री हंस जी महाराज की महानता, उनकी दिव्यता और जो उन्होंने ज्ञान का रास्ता दिखाया, वह अद्भुत था। उनके आशीर्वाद और कृपा से ही आज इस सत्संग पंडाल में इतनी बड़ी संख्या में लोग बैठे हैं। हर वर्ष हम उनकी पावन जयन्ती जनकल्याण समारोह के रूप में मनाकर उनको याद करते हैं। अपने गुरु महाराज जी को तो भक्त पल-पल याद करता है और जो उन्हें याद नहीं करता, वह उनका सच्चा भक्त नहीं। वही भक्त और सेवक सच्चा है, जो पल-पल में गुरु महाराज जी को याद करके अपने जीवन की उन्नति एवं आत्म-उत्थान का मार्ग अपनाता है। सबसे बड़ी शक्ति, जो हमारे गुरु महाराज ने हमें दी है, वह है ज्ञान की शक्ति।

आप प्रतिवर्ष रामलीला देखते हैं। रावण के पास युद्ध के लिए भव्य रथ है, बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्र हैं। वे सारी युद्ध-भूमि में तैनात हैं। बीच में विभीषण खड़ा है और दूसरी तरफ त्रिलोकी के नाथ भगवान श्री राम खड़े हैं। विभीषण को भय लगा कि रावण तो इतना शक्तिशाली है कि वह बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों को युद्ध के लिए लेकर आया हुआ है और भगवान श्री राम के पास वैसा कुछ भी नहीं है। भगवान श्री राम समझ गए कि विभीषण के मन में शंका उत्पन्न हो गई है। भगवान श्री राम कहते हैं-विभीषण! तू सोच रहा है कि रावण भव्य अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित है, इसलिए उसे हम युद्ध में जीत नहीं सकते? तू चिंता मत कर! मेरे पास ऐसा विजय रथ है, जिसके आगे रावण के सारे अस्त्र-शस्त्र व्यर्थ पड़ जायेंगे। शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिये हैं। सत्य और शील उसकी मजबूत ध्वजा और पताका है। बल, विवेक, दम और परोपकार- ये चार घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से जुड़े हुए हैं। ईश्वर का भजन ही चतुर सारथी है।

प्रेमी सज्जनों! सारा संसार केवल अपने हित के लिए ही कार्य करता है, पर महापुरुष हमेशा परहित के लिए ही सोचते हैं, हमेशा दूसरों के कल्याण में लगे रहते हैं। भगवान श्री राम कहते हैं कि विभीषण! जिस विजय रथ का सारथी ज्ञान है, जो सत्य का अनुकरण करने वाला है, उसके सामने रावण का कोई भी शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र काम नहीं आ सकता। रावण की निश्चय ही हार होगी; क्योंकि रावण इस समय असत्य का साथी बना हुआ है। आज इस कलिकाल में गुरु महाराज जी भी सारे देशवासियों को विनाश से बचाना चाहते हैं। जिसके पास ज्ञान का, विजय का रथ हो, उसे किसी और रथ की आवश्यकता नहीं।

जो सत्य का अनुसरण करता हो, उसे संसार में कोई हरा नहीं सकता है और यह मन्तव्य तो पहले से ही चला आ रहा है कि राजनीति, धर्म के समन्वय के बिना चल नहीं सकती। जब तक हमारा राजा धार्मिक नहीं होगा, तब तक हमारी प्रजा भी धार्मिक नहीं होती। जब राजा ज्ञानी होगा, परहित चाहने वाला होगा, तो प्रजा में कोई भी व्यक्ति दु:खी नहीं होगा। कलिकाल में जब सारे ही लोग ज्ञानहीन हो जायेंगे, तो कोई किसी को रास्ता कैसे बतायेगा? इसलिए जब

ज्ञानी महापुरुष मनुष्य शरीर में आते हैं, तो वे ऐसे ज्ञान और सत्य मार्ग पर सबको चलाते हैं, जिससे व्यक्ति समस्त बुराइयों से बच जाता है।

महापुरुष ज्ञानरूपी प्रकाश का रास्ता दिखाकर आपको मंजिल तक पहुंचा देते हैं। आज मनुष्य अशान्त बना हुआ है। उसकी ज्ञान की आंखें बन्द हैं, उन पर अज्ञान की पट्टी बंधी हुई है। वह आर्त भाव से चिल्ला रहा है। जब कोई सन्त देखते हैं कि यह जिज्ञासु है, तो वे उसको गुरु महाराज के पास ले जाते हैं और गुरु महाराज की कृपा से अज्ञान का पर्दा हटता है। जिज्ञासु जब गुरु दरबार में आकर ज्ञान जान लेता है, फिर वह संसार में भटकता नहीं है। उसके ज्ञान की दौलत को कोई चोर चुराकर नहीं ले जा सकता है।

उद्दालक मुनि का बेटा जब सारी सांसारिक विद्याएं प्राप्त कर घर आया तो उसने पिता को प्रणाम नहीं किया। पिता ने कहा कि बेटा! क्या तू सारी विद्याएं प्राप्त करके आया है? उसने कहा- हां पिताजी! अब कोई भी विद्या नहीं बची, जो मैंने नहीं सीखी हो। पिता समझ गये कि बाहरी शिक्षा प्राप्त करके पुत्र को अभिमान हो गया। पिता कहते हैं- बेटा! अभी एक विद्या जाननी बाकी है, वह है–आत्मज्ञान। वह कहता है- पिताजी! यह विद्या तो मेरे गुरु के पास ही नहीं थी। अगर आप उस आत्मज्ञान की विद्या को जानते हैं, तो मुझे बताओ। पिता ने उस समय गुरु का नाता अदा किया और श्वेतकेतु को वह अध्यात्म ज्ञान दिया। उन्होंने कहा कि जिस तरह मिट्टी का बोध होने से मिट्टी से बनी सारी चीजों का ज्ञान हो जाता है, इसी तरह जब हम उस आत्म-शक्ति को पहचान जाते हैं, तो सारा संसार अपना ही लगता है, सारा संसार प्रकाशमय लगता है। जिस तरह मधुमक्खियां तरह-तरह के फूलों से रस लाती हैं और छत्तों में उसको डालकर शहद बनाती हैं, तो वहां पता नहीं चलता है कि वह किस फूल का रस है। इसी तरह सत्य से ही हम सब निकलते हैं और एक दिन सत्य में ही समा जाते हैं, लेकिन अज्ञानता के कारण हम उस सत्य को जानते ही नहीं।

इसलिए हमें सत्पुरुषों की जरूरत होती है और ऐसे कलिकाल में तो उनकी परम आवश्यकता है। कहा है-

> यह मन्तव्य तो पहले से ही चला आ रहा है कि राजनीति, धर्म के समन्वय के बिना चल नहीं सकती। जब तक हमारा राजा धार्मिक नहीं होगा, तब तक हमारी प्रजा भी धार्मिक नहीं होती। जब राजा ज्ञानी होगा, परहित चाहने वाला होगा, तो प्रजा में कोई भी व्यक्ति दु:खी नहीं होगा।

आग लगी आकाश में,
झड़-झड़ पड़े अंगार।
सन्त न होते जगत में,
तो जल मरता संसार।।

संसार में ऐसा कोई भी नहीं है, जो विनाश से हमें बचा सके। चाहे मिसाइल हो, चाहे बड़े-बड़े अणुबम, उससे तो विनाश ही होगा, बच नहीं सकते। सारी मानव जाति समाप्त हो जायेगी, पर संत–महापुरुषों के पास ज्ञान का ही एक ऐसा रास्ता है, जो मानव को बचा सकता है। उनके पास भगवान के नाम का ऐसा शक्ति रूपी बम है, जिसके विस्फोट से शान्ति और मुक्ति का द्वार खुलता है-

आप जपे औरों को जपावे।
नानक निश्चय मुक्ति पावे।।

संयुक्त राष्ट्र संघ में कितनी बड़ी-बड़ी मीटिंगे होती हैं, पर उनसे भी राष्ट्रों में शान्ति उत्पन्न नहीं हो रही है। सत्संग ही एक ऐसा माध्यम है, जो शान्ति प्रदान करता है। सत्संग मनुष्य के पापों को मिटा देता है। कितने ही कष्टों को मिटा करके हमें ऐसे पुनीत मार्ग पर लगा देता है, जिस मार्ग पर चलने से हमारा कल्याण होगा।

जब हम शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल जाते हैं, तो हमें अध्यापक की आवश्यकता होती है। स्कूल में एक साल तक फीस जमा करनी होती है तथा कापी-किताबें खरीदनी होती हैं। इसी तरह अध्यात्म ज्ञान को पाने के लिए भी हमें समय के सद्गुरु की खोज करनी होगी। सद्गुरु के बिना किसी भी तरह की शिक्षा को प्राप्त नहीं किया जा सकता। सद्गुरु संसार में हर समय मौजूद रहते हैं, लेकिन जरूरत है- उन्हें पहचानने की। नारद मुनि की मां संतों की सेवा करती थी। वह उनका भोजन बनाती थी और संतों की सेवा में अपना समय बिताती थी। संतों के भोजन के बाद जो जूठन बच जाती थी, उसे प्रसाद समझकर वह नारद जी को खिलाती थी। प्रसाद मात्र खाने से नारद जी के अंदर प्रभु को जानने की जिज्ञासा पैदा होने लगी। उनके अंदर एक छटपटाहट थी कि मैं प्रभु को कब प्राप्त करूंगा? मैं प्रभु से कब भेंट करूंगा? नारद का यह सौभाग्य था कि वे दिन-रात कभी भी बाहरी रूप से भगवान के दर्शन कर लेते थे, लेकिन उन्हें आत्मज्ञान प्राप्त नहीं था।

नारद जी विष्णु लोक में एक संदेश वाहक, एक मैसेंजर की तरह काम करते थे। एक दिन नारद जी भगवान के सामने जाते हैं और पृथ्वी लोक के लोगों की व्यथा सुनाते हैं। बाद में जब वे पृथ्वी लोक में नीचे आते हैं, तो उनको कुछ याद आती है कि मैं आज विष्णु भगवान

को कुछ बताना भूल गया। नारद जी पुनः वापस विष्णु लोक जाते हैं। वहां वे देखते हैं कि भगवान की सेवा में ऋषि-मुनि, संन्यासी तथा भक्त लगे हैं। जहां-जहां नारद के चरण पड़े थे, वे सब वहां-वहां की मिट्टी पलट रहे हैं, वहां की सफाई कर रहे हैं। भक्त लोग उस आसन को झाड़ रहे हैं, जहां नारद जी बैठे थे। नारद जी पूछते हैं कि इस स्थान पर इतनी क्या गंदगी थी, जो तुम साफ-सफाई करने में लगे हो। सब भक्त लोग कहने लगे- नारद जी, आप अज्ञानी हैं। आपको आत्मतत्व का बोध नहीं है। आप विष्णु भगवान के दरबार में आए हैं। जहां-जहां पर आप बैठे हैं, जहां-जहां आपके पैर पड़े, वहां की मिट्टी अशुद्ध हो गई। इसलिए हम उसको साफ कर रहे हैं, उस स्थान को निर्मल बना रहे हैं।

नारद मुनि कहते हैं कि यह ज्ञान क्या है? मैं तो रोज भगवान के पास बैठता हूं, रोज भगवान से रूबरू होता हूं, मैं उनसे रोज चर्चा करता हूं और मैं प्रतिदिन भगवान से संपर्क करता हूं। मैं अशुद्ध कैसे हूं? नारद जी भगवान विष्णु के पास जाते हैं और कहते हैं- प्रभु, मैं यह सब क्या देख रहा हूं। भगवान कहते हैं कि नारद, तू इस मर्म को समझेगा नहीं। नारद जी, सद्गुरु की खोज करो। सद्गुरु तुम्हें इस मर्म को समझायेंगे। नारद जी कहने लगे- प्रभु, मैं गुरु कहाँ खोजूंगा! आप ही मुझे मार्ग बता दीजिए। भगवान विष्णु ने कहा- नारद, सुबह-सुबह तुम्हें जो प्रथम व्यक्ति मिले, उसी को अपना गुरु बना लेना। नारद जी अगले दिन सुबह जब घर से निकले, तो उन्हें एक व्यक्ति मिला, जो मछुआरा था। नारद जी ने उसे प्रणाम किया और कहा कि आज से आप मेरे गुरु हैं; मैंने आपको अपना गुरु बना लिया। कुछ दिन बाद जब नारद जी वैकुण्ठ धाम गए तो उन्होंने खुशी-खुशी भगवान विष्णु को बताया कि मैंने गुरु बना लिया है, लेकिन! भगवान विष्णु ने कहा कि नारद, तुमने गुरु के लिए लेकिन कहा है अर्थात उनके प्रति शंका व्यक्त की है, इसलिए तुम्हें नरक में जाना पड़ेगा। नारद जी भौचक्के रह गए। उन्होंने भगवान विष्णु से पूछा कि अब इससे छुटकारा कैसे मिलेगा? तो भगवान विष्णु ने कहा कि तुम गुरु के पास जाओ, वे ही नरक से बचने का उपाय बतायेंगे।

नारद जी अगले दिन गुरु की शरण में पहुँचे और क्षमा याचना करते हुए अपनी गलती के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भगवान विष्णु ने कहा कि गुरु के प्रति शंका की वज़ह से तुम्हें नरक में जाना पड़ेगा। हे गुरुदेव, इस नरक से आप ही बचा सकते हैं, मैं आपको शरण में हूं, कृपा कर उपाय बताइए।

> जिस तरह मिट्टी का बोध होने से मिट्टी से बनी सारी चीजों का ज्ञान हो जाता है, इसी तरह जब हम उस आत्म-शक्ति को पहचान जाते हैं, तो सारा संसार अपना ही लगता है, सारा संसार प्रकाशमय लगता है।

गुरु महाराज ने कहा कि जब वैकुण्ठ धाम भगवान के पास जाओ, तो उनसे कहना कि मुझे नर्क और स्वर्ग का ज्ञान नहीं है, आप मुझे नर्क और स्वर्ग के बारे में विस्तार से समझाने की कृपा करें। जब भगवान नर्क और स्वर्ग का नक्शा बनाकर उनके बारे में बतायें, तो तुम नर्क वाले नक्शा पर लेट जाना और कहना प्रभु, यह नर्क भी आपका बनाया हुआ है और वह नर्क भी आपका बनाया हुआ है। मैं नर्क में जाकर पुनः आपके पास आ गया हूँ। गुरु की बात मानकर दूसरे दिन नारद जी वैकुण्ठ धाम पहुंचे। नारद जी कहने लगे कि प्रभु, आप जिस नर्क की बात कर रहे थे, वह कैसा है? भगवान ने वहीं पर नर्क का नक्शा बनाया, तो नारद जी उसमें लेट गये। नारद जी कहने लगे- भगवान, वह नर्क भी आपका बनाया हुआ है और यह नर्क का नक्शा भी आपका बनाया हुआ है। मैं नर्क में जाकर पुनः आपकी शरण में आ गया हूँ। भगवान समझ गए कि नारद का जरूर किसी संत से संपर्क हुआ है। भगवान कहते हैं कि नारद, तुम्हें यह तरीका किसने बताया? नारद जी ने कहा- प्रभु, यह उपाय मुझे सद्गुरु महाराज ने बताया है। वास्तव में सद्गुरु महाराज जीव को नर्क और स्वर्ग से मुक्त होने का उपाय बताते हैं। इसलिए जीवन में सद्गुरु महाराज का बहुत महत्व है। बिना गुरु के कोई जीव संसार सागर से पार नहीं हो सकता। बात तो सही है कि नर्क और स्वर्ग सभी भगवान का बनाया हुआ है, परन्तु हम अपने-अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग और नर्क के अधिकारी बनते हैं और उनका फल भोगते हैं। भगवान कहते हैं कि नारद, तुम ज्ञान की खोज करो और सद्गुरु से उस आत्मज्ञान को प्राप्त करो। जब तुम अध्यात्म ज्ञानी बन जाओगे, तब तुम्हारे जीवन से भेद और अभेद का अंतर मिट जाएगा। सद्गुरु के बारे में संतों ने कहा-

सद्गुरु की महिमा अनंत,
अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़ियां,
अनंत दिखावन हार।।

जब नेत्रों में मोतियाबिंद हो जाता है, तो हम डॉक्टर के पास जाते हैं। डॉक्टर उस मोतियाबिंद को हटा देता है, तो उन नेत्रों से फिर दिखना शुरू हो जाता है। इसी तरह सद्गुरु महाराज आत्मज्ञान के द्वारा अज्ञानता के अंधेरे को दूर कर जीवन को प्रकाशित करते हैं।

SPIRITUALITY IS THE ONLY WAY TO BRING PEACE TO SOCIETY

MATA SHRI RAJESHWARI DEVI

Dear Premies, by learning the Divine Knowledge, you now have a great opportunity to serve the society also. Organization of this program and all its preparations has been accomplished by people like you. If a member turns to alcohol or gambling, it can damage that entire household. Similarly, if a member turns towards spirituality then he takes good care of his family and makes positive contribution towards society as well.

I want good education for all so that man can get learn and improve his conditions. So you have to support these initiatives and help to spread these spiritual teachings. "Premies" should get together and organize discourses by Mahatmas, and Mahatmas should aim to travel far and wide to spread the message. This magazine publishes spiritual discourses and positive articles: this also aids the spread of teachings. Books are the lifeline of every organization. A woman came from Udhampur; a priest had given her our magazine. After reading the magazine she listened to discourses for two days and then got Divine Knowledge. If she now develops a routine of regular meditation, her life would get transformed. Don't look at man's weaknesses, for if you seek vices you'll find lots of them and if you seek man's virtues then you'll find many of them too. Saint Kabir says:

I set out to find the worst of them and all I see is goodness,

When I peek inside my heart, I see a lot of weaknesses.

Don't look at a person's misdeeds, as one day he will have to pay for them. You go on performing your good deeds or Karmas. Our Guru Maharaj Ji always spreads spiritual teachings. He said that he derived immense joy in spreading the teachings to his disciples. He said that he liked poor people because they do meditation, have devotion and follow my advice and teachings. He liked spending time with his disciples the most.

It is his instruction to us all to spread the spiritual teachings. He used all means to accomplish this, be it a camel, a baggage cart, cycle or train. He travelled a lot to take his message to different people. Many people are gathered here and some of them got Divine Knowledge today and this is truly remarkable as their lives are now transformed. I urge you to leave negative thought patterns behind. When you mediate regularly on Holy Name, you will find inner peace.

Even great men had to go through difficult periods and testing times in their lives. The mother of this universe who was born as the wife of the great Avatar faced much pain in her life. Draupadi was wife of five extraordinary warriors and even she faced many troubled times. Those problems turn you to God and make you remember His Name.

Bhilni was born before the birth of Lord Ram. She had great faith that Ram will come to her hut one day and indeed he arrived one day. To all those places that you invite us to, we will come and organize Satsang programs. People are engaged in building Ashrams at many places. These are built primarily to provide good facilities to you otherwise we have little use for them. As far as teachings are concerned, we can give our message even from under a tree or at the bank of Ganges and people will surely flock, as the teachings are powerful and transformative.

When I ask people about meditation schedule, they always tell me that they do some meditation. But for their business they are very regular and punctual, thinking a about growing it day and night. When a man truly loves something, he will do proper Karma to achieve or establish it. The reason he finds himself handicapped on

the spiritual path is because he hasn't developed full devotion or love for it. His actions are directed towards his stomach rather than on the spiritual path.

Today we are reminded of the old times when unrest rose in this world and man was unable to distinguish good from bad. Great teachers always guided him for a course correction towards the spiritual way of life to bring peace to the society and to the nation. Pandit Ji just spoke about Adi Shankaracharya who established many Maths and four Dhaams. A man of knowledge doesn't carry any negativity. He is akin to the Sun that gives light to all and doesn't divide people by caste, creed or religion. Patient could be of any religion but the doctor doesn't care about it and his only objective is to cure him.

We have many learned people here from different parts of India and they have taken an oath for developing peace and harmony. Shri Hans Ji Maharaj met many wise and powerful people but he always maintained that one should develop an awakening inside the heart. This is the only way to peace.

I take man's ability to perform Karma or action as the foremost duty. God will then support you. If a dessert is served on the table, you won't know it's delicious taste until you pick it up and eat it. As we understand the teachings of Shri Maharaj Ji, things like materialism, business or reputation would meanlittle to us. The joy of spreading the spiritual teachings is truly unique! Many people tell us that your children are wise and learned, and that you should make them enter politics, as it will help nation building and aid in spread of peace to the citizens. But I said no.

Our passion is Ram's Name, our passion is Krishna's Name

Shri Maharaj Ji taught this to all. Just as a parent educates his kids, similarly he gave the best education to us – to remember God, and to spread His message.

One who mediates himself and other learn it,

He will surely reach salvation

Nanak Ji said the same thing. Other learned teachers had the same message but in different languages. We failed to understand their message and have divided ourselves. We are all one and our path is the same, and it is this internal unity or connection that we need to understand. Lack of its knowledge is what has separated us. This message of our teacher is what we have to spread. We may be poor but Shri Hans Ji Maharaj has bestowed us with riches of Holy Name and this can never be taken away from us.

So we should remember the true name of God. That Holy Name is so powerful that the disciple who mediates regularly will achieve liberation. To achieve this goal of our teacher, we need to act or perform service. Look around; people from all castes are present here. Hindus are here and so are Muslims and others. Here everyone is just a human. Upon noticing a vice in someone we may scold that person, but our act is like that of a mother who loves their children and may scold or reprimand them for their own good.

I am reminded of what Shri Maharaj Ji used to say about this place, that this is such a wonderful abode where people will do breakfast and listen to spiritual discourses, and before they return home to cook their dinner they will also get darshan. In the religious books you learn that disciples performed great sacrifices, and compared to that our task is small. Kabir Ji says that one should be ready to sacrifice his life for our teacher's higher purpose. So if you want to initiate a spiritual awakening in fellow man then this message must reach every corner of this country and beyond. And until the root or foundation of different religions is understood then people will not understand this message. As man develops this understanding, it will lead to an inner transformation.

All this needs to be done in a proper manner and you may notice that it is cyclic in nature –good progress at times and not so much at other junctures. But this follows God's will. There were many clouds here but it didn't rain. Its as if nature also supports the higher purpose. In Gita, Lord Krishna says that doing the righteous action is under your control but the results or fruits are as per God's will.

Today people are killing each other over inadequate water. Once a disease spread in the cowshed of a village. I took all cows to the bank of a river, which had low water level. Somehow at night, the water level rose and the animals stayed there for a month. They used to drink and bathe in this water. All the villagers were astonished that the river developed a good flow of water since the day I arrived.

अध्यात्म व खगोल विज्ञान का अनूठा संगम है प्रयागराज महाकुंभ मेला

प्रयागराज महाकुंभ, जिसे विश्व के सबसे बड़े धार्मिक आयोजन के रूप में जाना जाता है, न केवल श्रद्धालुओं का मेला है, बल्कि यह मानव जाति की आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करने का अनुपम अवसर भी है। यह आयोजन भारतीय संस्कृति, खगोल विज्ञान और वेदों के गहन अध्ययन तथा चिंतन मनन के अमृत का पान करने-कराने का पावन अवसर है। इस महाकुंभ मेले का आयोजन ग्रह-नक्षत्रों की विशेष स्थिति पर आधारित होता है, जिसमें

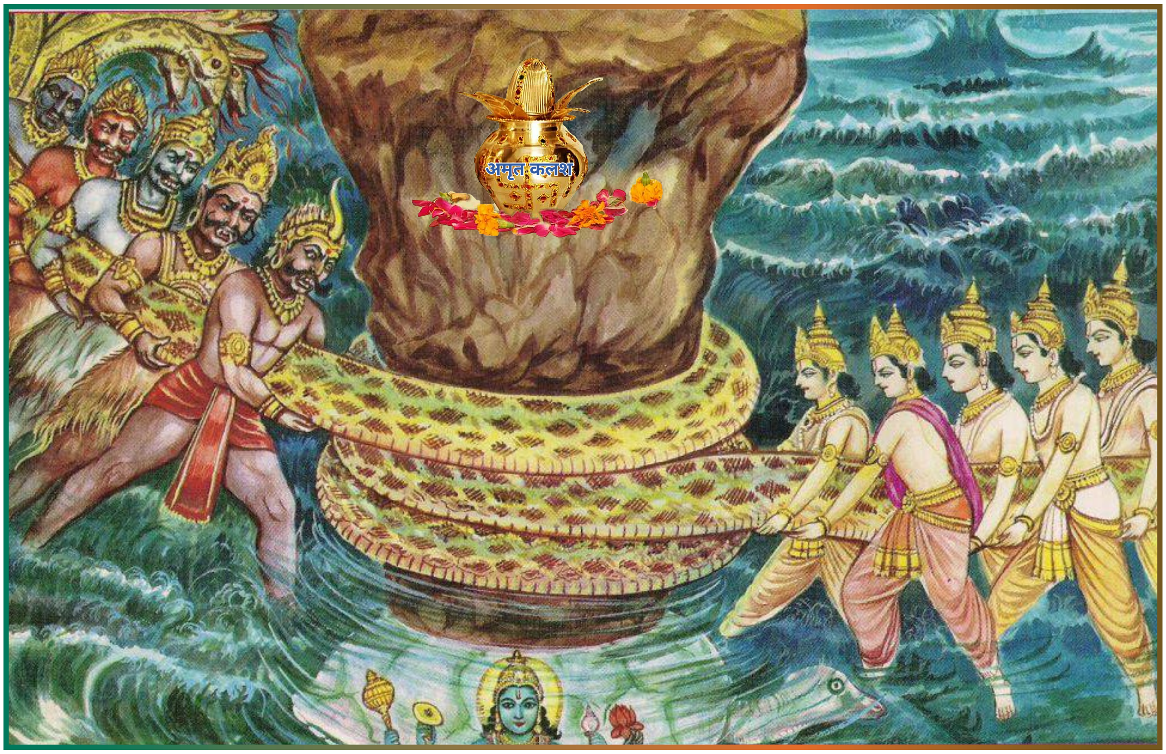

सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रहों की सौर मंडल में स्थितियों का विशेष महत्व है। जब बृहस्पति बृषभ राशि में प्रवेश करता है और सूर्य मकर राशि में होता है, तब प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। यह आयोजन प्रयागराज के त्रिवेणी संगम के पवित्र तट पर होता है। प्रयागराज, जिसे पहले इलाहाबाद भी कहा जाता था, गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित है। यह स्थान भारत के आध्यात्मिक इतिहास का केंद्र है। मान्यता है कि देवताओं और असुरों के द्वारा किए गए समुद्र-मंथन के समय प्राप्त अमृत कलश से कुछ बूंदें संगम तट पर गिरी थीं, जिससे यह भूमि पवित्र और अमृतमय हो गई। इस पवित्रता की आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करने के लिए लाखों श्रद्धालु भक्त कुंभ मेले के दौरान यहां स्नान करने आते हैं। इस मेले का आयोजन गहन ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर होता है। महाकुंभ का समय और स्थान ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर निर्धारित होता है। इसके लिए भारतीय पंचांग और वैदिक ज्योतिष के अनुसार, सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की स्थिति पर विचार किया जाता है। महाकुंभ हर 12 साल में आयोजित होता है, और इसे चार प्रमुख स्थलों- प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है। लेकिन प्रयागराज का महाकुंभ अद्वितीय माना जाता है, क्योंकि यह अध्यात्म, विज्ञान और संस्कृति का अनूठा संगम होता है। श्रद्धालु यह मानते हैं कि संगम में स्नान करने से उनके पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। सच कहिए तो महाकुंभ मेला आध्यात्मिक अनुभव का महासागर परिलक्षित होता है। यह न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि सनातन संस्कृति का एक ऐसा मंच है, जहां विविधता में एकता की भारतीय परंपरा जीवंत हो उठती है। सभी संत, महात्मा, अखाड़ों के नागा साधु, गृहस्थ और देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु इस महासंगम में भाग लेते हैं।

विभिन्न संत महात्माओं और विद्वानों के आध्यात्मिक प्रवचन, कीर्तन और योग शिविर महाकुंभ के आकर्षण का केन्द्र होते हैं। यहां आने वाले श्रद्धालु न केवल पवित्र स्नान करते हैं, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान की गहराई में भी गोता लगाते हैं। महाकुंभ का आयोजन केवल एक धार्मिक कृत्य नहीं बल्कि यह जीवन के गहन रहस्यों को समझने और आत्मा की शुद्धि का अवसर है। यह आयोजन हमें प्रकृति, अध्यात्म और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ जुड़ने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। महाकुंभ में शामिल होना केवल एक तीर्थ यात्रा नहीं, बल्कि आत्मिक उत्थान और सांस्कृतिक समृद्धि

है, बल्कि यह आत्मा की शुद्धि, ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ जुड़ने और आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ाने का अवसर है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, महाकुंभ में संगम तट पर स्नान करने से व्यक्ति अपने सभी कर्मों के बंधनों से मुक्त हो जाता है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इतना ही नहीं, महाकुंभ के मेले में प्राचीन भव्यता और आधुनिकता का समन्वय भी देखने को मिलता है। पुरानी पीढ़ी के आदर्शों को देख नई पीढ़ी को भी प्रेरणा और जीवन की नई दिशा मिलती है। महाकुंभ का आयोजन हमें यह सिखाता है कि जीवन में केवल भौतिक सुखों का महत्व नहीं है। यह हमें अपने भीतर झांकने और जीवन की उच्चतम संभावनाओं की खोज करने की प्रेरणा देता है। महाकुंभ के माध्यम से मानवता को शांति, प्रेम और अध्यात्म का संदेश मिलता है। प्रयागराज महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, का अनुभव है। महाकुंभ हर उस व्यक्ति को आमंत्रित करता है जो अपनी आत्मा को शुद्ध करना चाहता है और जीवन के गूढ़ अर्थों की तलाश में है। यह न केवल श्रद्धालुओं के लिए, बल्कि मानवता के लिए भी एक प्रेरणास्रोत है।

इस बार प्रयागराज महाकुंभ मेला 13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित किया जा रहा है। इस पुनीत अवसर पर 6 मुख्य शाही स्नान होंगे यथा- पौष पूर्णिमा 13 जनवरी, मकर संक्राति 14 जनवरी, मौनी अमावस्या 29 जनवरी, बसंत पंचमी 2 फरवरी, माघ पूर्णिमा 12 फरवरी और महाशिव रात्रि 26 फरवरी, 2025। तो आइए, प्रयागराज में आयोजित इस दिव्य आध्यात्मिक समारोह में त्रिवेणी में डुबकी लगाने के साथ अध्यात्म ज्ञान गंगा में भी गोता लगाकर अपने मानव जीवन को अंदर और बाहर से पवित्र कर सार्थक बनायें। ■

मकर संक्रांति एक उत्सव है ऋतु परिवर्तन व अनमोल आध्यात्मिक अनुभूति का

हमारा देश भारत, पर्व-त्योहारों का देश कहा जाता है, जहां हर पर्व अपनी अनूठी पहचान और आध्यात्मिक महत्व के साथ मनाया जाता है। इन्हीं में से एक है मकर संक्रांति, जो न केवल एक खगोलीय घटना है, बल्कि भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा भी है। यह पर्व सूर्य देव की आराधना पर्व के साथ नई फसलों की खुशी और आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक उत्सव भी माना जाता है। यह पर्व हर साल जनवरी महीने में मनाया जाता है, जब सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है। इसे सूर्य के उत्तरायण की शुरुआत माना जाता है, जो शास्त्रों के अनुसार शुभ और सकारात्मकता से परिपूर्ण समय का संकेत है। मकर संक्रांति के दिन से ही दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती हैं, जो न केवल खगोलीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी इसे नवजीवन और प्रकाश का आरंभ माना जाता है।

हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में मकर संक्रांति को अलग-अलग नामों और परंपराओं के साथ मनाया जाता है। यह पर्व हर क्षेत्र में वहां की संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं के साथ जुड़ा हुआ है। पंजाब और हरियाणा में मकर संक्रांति से पहले लोहड़ी का पर्व मनाया जाता है। यह पर्व मुख्यत: किसानों के लिए नई फसल की खुशी और अग्नि देव की आराधना का अवसर है। लोहड़ी की रात को अलाव जलाकर उसमें तिल, रेवड़ी, मूंगफली, और गुड़ डालने की परंपरा है। उत्तर प्रदेश और बिहार में इसे खिचड़ी पर्व के रूप में मनाया

जाता है। गंगा स्नान, दान-पुण्य और खिचड़ी भोजन के बिना यह पर्व अधूरा माना जाता है। पश्चिम भारत में उत्तरायण और तिलगुल उत्सव के रूप में इसे मनाया जाता है। गुजरात प्रांत में इसे उत्तरायण कहा जाता है। वहां पतंग उड़ाने का अद्‌भुत उत्साह इस पर्व की पहचान बन गया है। इस दिन वहां का आकाश रंग-बिरंगी पतंगों से सजीव हो उठता है। जब कि महाराष्ट्र में इसे तिलगुल उत्सव के रूप में मनाया जाता है। लोग एक-दूसरे को तिलगुल और गुड़ देते हुए रिश्तों के मिठास की कामना करते हैं। दक्षिण भारत में मकर संक्रांति का पर्व पोंगल के नाम से प्रसिद्ध है। यह चार दिनों का उत्सव है, जिसमें भगवान सूर्य को धन्यवाद देते हुए नई फसल का स्वागत किया जाता है। वहां पोंगल नामक विशेष मिठाई इस पर्व का मुख्य आकर्षण होती है।

पूर्वोत्तर प्रांत असम में इसे बिहू के नाम से मनाया जाता है। यह फसल कटाई के बाद का उत्सव है, जिसमें भोज, नृत्य और पारंपरिक खेलों का आयोजन होता है। जबकि पश्चिम बंगाल और ओडिशा में यह पर्व गंगा सागर मेले के लिए प्रसिद्ध है। मकर संक्रांति के दिन हज़ारों श्रद्धालु गंगा नदी के संगम पर स्नान कर भगवान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं। मकर संक्रांति का सबसे बड़ा आध्यात्मिक पक्ष है, इसकी दान-पुण्य की परंपरा। इस दिन तिल, गुड़, अन्न, और कपड़ों का दान करने का विशेष महत्व है।

शास्त्रों के अनुसार, इस दिन किया गया दान सौ गुना फलदायक होता है। इस दिन गंगा स्नान और सूर्य को अर्घ्य अर्पित करना, आत्मशुद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। ऋग्वेद और स्कंद पुराण में मकर संक्रांति के दिन को अत्यंत पवित्र बताया गया है। यह पर्व हमें अपने अहंकार को त्यागकर परोपकार और सामूहिक भलाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। ये पर्व न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है, बल्कि यह सामाजिक एकता और सौहार्द का भी प्रतीक है। इस दिन सामूहिक भोज, मेलों, और उत्सवों का आयोजन होता है, जो समाज में भाईचारे और प्रेम की भावना को बढ़ावा देता है। पतंग उड़ाने, नृत्य-गीत, और पारंपरिक खेलों के माध्यम से लोग इस पर्व को और अधिक जीवंत बनाते हैं। यह पर्व भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का अभिन्न हिस्सा है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में प्रकाश, ऊर्जा, और सकारात्मकता का महत्व कितना बड़ा है। यह पर्व केवल सूर्य के खगोलीय परिवर्तन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के अंधकार से प्रकाश की ओर यात्रा का प्रतीक है। आइए, इस पवित्र पर्व पर हम सभी अपने जीवन में तमसो मा ज्योतिर्गमय की भावना सहित नई ऊर्जा, सादगी, और परोपकार के गुणों को अपनाने का संकल्प लें। ■

प्रेरक प्रसंग

गोबर से भरा भिक्षा पात्र

एक बार भगवान बुद्ध यात्रा करते हुए किसी ग्राम में पहुँचे। धर्म सभा खत्म होने के बाद एक सेठ ने बुद्ध को अपने घर भिक्षा के लिए पधारने का आग्रह किया। उस सेठ के जाने के बाद गांव वालों ने कहा कि यह बहुत ही लालची और कंजूस व्यक्ति है; लेकिन बुद्ध ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सेठ के आग्रह पर उसके घर भिक्षा के लिए पधारे। उसने बुद्ध के लिए खीर बनवाई। बुद्ध को जिस कमंडल में भिक्षा ग्रहण करनी थी, वह गोबर से भरा हुआ था। उस पात्र को देख सेठ ने कहा, 'भगवन! गोबर से भरे इस पात्र में खीर कैसे भरी जा सकती है? यह पात्र एक बार आप मुझे दें, मैं इसे अभी साफ करके ले आता हूँ।' सेठ ने बुद्ध के हाथ से कमंडल लेकर उसे धो-मांज कर साफ कर दिया और फिर प्रसन्नता के साथ उसे खीर से भर दिया। खीर लेकर जब बुद्ध लौटने लगे, तो उस सेठ ने कहा, 'भंते! कृपा कर मुझे उपदेश दें।' बुद्ध ने कहा, 'वत्स! मैं तुम्हारे घर भिक्षा के लिए नहीं, बल्कि तुम्हें उपदेश देने के लिए आया था और मैं तुम्हें उपदेश दे चुका हूँ।' सेठ ने अनुनय-विनय करते हुए कहा, 'प्रभु! मैं आपके कथन का मर्म नहीं समझ सका। आप मुझ पर कृपा कर इसे और स्पष्ट करें।' बुद्ध ने कहा, 'जिस तरह गंदे बर्तन में अच्छी चीज नहीं भरी जा सकती, उसी तरह लोभ और लालच के दलदल में आकंठ डूबी जिसकी चेतना हो, वह कभी महानता का वरण नहीं कर सकता। अगर तुम्हें अपने जीवन को सार्थक और सफल बनाना है, तो लोभ का त्याग करके हृदय को निर्मल बनाओ। जब तुम्हारा जीवन निर्मल, पवित्र और उज्ज्वल बन जाएगा, मेरा उपदेश तुम स्वयं ग्रहण कर लोगे। यदि लोभ का त्याग नहीं किया तो कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। यह बिल्कुल सत्य है।' ■

मुझे कौन पूछता था

मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले।
मैं तुम्हीं को ढूंढ़ता था, इस जिन्दगी से पहले।।
मैं खाक का जर्रा था, और क्या थी मेरी हस्ती।
मैं थपेड़े खा रहा था, जैसे तूफां में किश्ती।
दर-दर भटक रहा था, तेरी बन्दगी से पहले।।
मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले।।1।।
मैं था इस तरह जहाँ में, जैसे खाली सीप होती।
मेरी बढ़ गई है कीमत, तूने भर दिये हैं मोती।
मैं मिश्ले जानवर था, तेरी बन्दगी से पहले।
मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले।।2।।
यूँ तो हैं जहाँ में लाखों, तेरे जैसा कौन होगा।
तू है दरिया रहमत, तेरे जैसा कौन होगा।
मजा क्या था जिन्दगी में, तेरी बन्दगी से पहले।
मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले।।3।।
हुआ जो मेहरबाँ तू, सब दुनिया मेहरबाँ है।
जमीं भी मेहरबाँ है, आसमाँ भी मेहरबाँ है।
मुझे मिल गया सहारा, शमाँ बुझने से पहले।
मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले।। 4।।

विशाल जनकल्याण समारोह में दिया गया शांति, सद्भाव और अध्यात्म ज्ञान का संदेश

ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार। श्री हंस जयंति के शुभ उपलक्ष में हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में 16 व 17 नवंबर, 2024 को ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में आयोजित द्विदिवसीय विशाल जनकल्याण समारोह शांति, सद्भाव और अध्यात्म ज्ञान के संदेश के साथ निर्विघ्न रूप से संपन्न हुआ। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के सानिध्य में आयोजित इस समारोह में देश-विदेश से लगभग 15 हजार प्रेमीभक्तों, श्रद्धालुओं और साधु-संतों ने सहर्ष भाग लेकर आत्मलाभ प्राप्त किया। इस समारोह की तैयारियां 20 दिन पहले से ही आरंभ कर दी गयी थीं। सैकड़ों सेवकों के दिन-रात के अथक परिश्रम से मैदान को साफ-सुथरा और समतल बनाकर उसमें सुंदर व विशाल पंडाल, भव्य तीन मंच, जिन्हें रंग-बिरंगे पत्र-पुष्प-वस्त्रों से सुसज्जित किया गया था। मुख्य और मध्य मंच पर दाहिनी ओर योगिराज परमसंत श्री हंस जी महाराज एवं बाईं ओर जगतजननी माता श्री राजेश्वरी देवी की दिव्य छवि स्थापित की गयी थी तथा दाहिनी ओर के मंच पर श्री गणेश जी की छवि और बाईं ओर के मंच पर माता सरस्वती की छवि स्थापित की गयी थी जो अपनी दिव्य आभा से वातावरण को अलौकिक बना रही थीं। समारोह में पधारे भक्तों के लिए विशाल रसोईघर, भोजनालय, प्रवेश पत्र कार्यालय, स्वागत कक्ष, चिकित्सा शिविर, टी स्टॉल, पेयजल, यातायात एवं वाहन, आवास व्यवस्था एवं श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं एवं जूनियर सेवकों के कार्यालयों के साथ प्रेमीभक्तों के आवासार्थ होटल, धर्मशाला, आश्रम के अतिरिक्त मैदान में भी टेंटों की व्यवस्था की गयी थी। सम्पूर्ण समारोह परिसर में साफ-सफाई के लिए दिन-रात सफाई कर्मचारी सेवारत थे, निरन्तर पेयजल, स्नानघर, शौचालय आदि के लिए पानी उपलब्धता के लिए प्लम्बर और मोटर ऑपरेटर्स की तैनाती की गयी थी। सम्पूर्ण समारोह परिसर के साथ गंगा के घाटों, चारदीवारी, रास्तों, सड़कों को विद्युत प्रकाश से प्रकाशित किया गया था। समारोह परिसर के प्रवेश द्वारों को सुन्दर पत्र-पुष्प-वस्त्रों एवं स्वागतम् के बैनर से सुसज्जित किया गया था। जो जहाँ है, वहीं उसे समारोह को देखने का लाभ मिले, इसके लिए मुख्य मंच के साथ पंडाल के दोनों ओर, सामने तथा

श्री हंस जयंति के उपलक्ष में ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में 16 व 17 नवम्बर, 2024 को आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह को सम्बोधित करती हुई डॉ. माताश्री मंगला जी एवं साथ में मंच पर विराजमान परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

परिसर के विभिन्न स्थानों पर एलईडी की व्यवस्था की गयी थी। इसके अलावा समारोह का यू-ट्यूब पर लाइव प्रसारण किया जा रहा था जिससे लाखों-लाख भाव-विभोर हो रहे थे। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के प्रति उनका प्रेम, श्रद्धा और भक्तिभाव उनके हावभाव से स्पष्ट नजर आ रहा हो रहा है। सुबह, दोपहर और रात्रि का भोजन-प्रसाद भण्डारा निरन्तर जारी रहा, समारोह में पधारे सभी प्रेमीभक्तों ने स्वादिष्ट दिव्य भोजन प्रसाद का आनंद

श्री हंस जयंति के उपलक्ष में ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में 16 व 17 नवम्बर, 2024 को आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में उमड़ा श्रद्धालु एवं प्रेमीभक्तों का अथाह सागर

लोग अपने घरों व कार्यस्थलों पर ही माताजी-महाराज जी को देख और सुन पा रहे थे।

प्रथम दिवस यानि 16 नवंबर, 2024 को प्रातःकाल से ही समारोह परिसर प्रेमीभक्तों, जिज्ञासुओं और साधु-संतों की उपस्थिति से भक्तिभाव से परिपूर्ण हो गया था। देश के विभिन्न प्रदेशों एवं क्षेत्रों से आए भक्तगण भिन्न-भिन्न वेशभूषा में दृष्टिगोचर हो रहे थे। सभी आनंदित और उल्लासित थे, उनके भीतर की खुशी चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। वे एक-दूसरे से मिलकर अत्यंत हर्षित और आनंदित हो रहे थे। कहीं वे टोली बनाकर भजन गा रहे थे, तो कहीं नृत्य कर रहे थे। कहीं परस्पर गहन ज्ञान चर्चा, तो कहीं वे श्री गुरु महाराज जी एवं माता जी से संबंधित अपने चमत्कारिक अनुभव एवं संस्मरण सुना-सुनाकर था। वे इस जनकल्याण समारोह में पधारकर कितने खुश हैं, ये उनके चेहरे के भावों को देखकर सहज ही महसूस किया जा सकता था। यह हजारों-हजार भक्तों, संतों और जिज्ञासुओं का ऐसा भाव-प्रवाह था जो संगठित होकर श्री गुरु महाराज जी एवं माता जी के श्री चरणों की ओर बह रहा था। सभी अपने भाग्य को सराह रहे थे, सभी के अन्दर से एक ही आवाज आ रही थी कि हम कितने सौभाग्यशाली हैं जो हमें आज महापुरुषों के सानिध्य में बैठने, उनके साक्षात् दर्शन का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। आज हमारा मानव तन पाना सार्थक हो गया, जीवन का अधूरापन पूर्णता को प्राप्त हो रहा है। हृदय से अज्ञानांधकार के बादल छंट चुके हैं, अब वहाँ श्री गुरु महाराज जी की कृपा से अध्यात्म-ज्ञान का दिव्य सूर्य प्रकाशमान लिया।

विशाल पंडाल में बने भव्य उच्च मंच पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी विराजमान होकर अपने दिव्य सानिध्य से सबको निहाल कर रहे थे। आचार्य श्री प्रकाश तिवारी के मार्गदर्शन में ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा स्वस्तिगान और स्वागत गान के साथ प्रथम दिवस के कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ। तत्पश्चात् मुम्बई से पधारी प्रसिद्ध पार्श्व गायिका सुश्री मिस्टू बर्धन ने अपने सुरीले भजनों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। हंसज्योति संस्था की ओर से सुश्री ऋतु राणा ने मिस्टू बर्धन का अंगवस्त्र ओढ़ाकर स्वागत किया तथा उनके सहयोगी संगीतकारों को शाल ओढ़ाकर श्री राकेश सिंह ने स्वागत किया। महात्मा शिवकृपानंद जी और श्री

मंगलभाई का सत्संग हुआ। तत्पश्चात् परमपूज्य श्री भोले जी महाराज ने अपने श्रीमुख से "हंसा निकल गया पिंजरे से, खाली पड़ी रही तस्वीर।" गाकर संसार की निसारता का संदेश दिया कि का निश्चय किया। उन्होंने कहा कि श्री महाराज जी ने अध्यात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए अथक परिश्रम किया। ये उस समय की बातें हैं जब संसाधनों का नितान्त अभाव था। श्री महाराज जी दे रहा है, यह उन्हीं की तपस्या का परिणाम है। आज हम सब भक्तों को उनके कृतित्व से प्रेरणा लेकर प्रचार-प्रसार के कार्य में समर्पित होकर संलग्न होने की आवश्यकता है। मिस्टू बर्धन के

श्री हंस जयंति के उपलक्ष में ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में 16 व 17 नवम्बर, 2024 को आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के स्वागत में ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय के छात्र स्वागत गान एवं स्वस्ति वाचन करते हुए

एक दिन इस संसार को छोड़कर चले जाना है, यह शरीर रूपी तस्वीर यहीं पड़ी रह जायेगी। उस समय तेरे साथ क्या जायेगा। अंत समय में साथ देने वाली हंस की शक्ति को जानें, उसी में हमारे जीवन का कल्याण सन्निहित है। मिष्टू बर्धन के भजन "कान्हा कान्हा आन पड़ी मैं तेरे द्वार" के पश्चात् डॉ. माताश्री मंगला जी का मंगलमय प्रवचन शुरू हुआ। माताश्री मंगला जी ने श्री हंस जी महाराज का स्मरण और नमन करते हुए कहा कि हरिद्वार श्री महाराज जी की कर्म-भूमि रही है। इसीलिए हमने श्री हंस जयंति हरिद्वार में मनाने बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, साइकिल आदि से गांव-गांव जाकर सत्संग प्रचार करते थे। वे ऐसे कृपालु और ज्ञान प्रचार के प्रति समर्पित थे कि जहाँ भी कोई भक्त उन्हें याद करता वे किसी भी बाधा की परवाह किये बिना वहाँ पहुँच जाते थे। दिन में दो-दो बार सत्संग-प्रवचन करते, दर्शन देते, जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करते और जो वास्तविक रूप से ज्ञान पिपासु होते थे, उन्हें ज्ञान उपदेश भी देते। इस तरह एक-एक कर गांव-कस्बा-शहर सभी जगह उनके शिष्य और भक्तों की संख्या बढ़ती गयी। आज जो भी विस्तार या चमत्कार दिखाई भजनों के साथ प्रथम दिवस का सत्संग संपन्न हुआ।

द्वितीय दिवस यानि 17 नवंबर, 2024 को प्रातःकाल से जिज्ञासुगण ज्ञान उपदेश के लिए कतारबद्ध हो गये थे। उपदेश कक्ष में महात्मा/बाईगण उपस्थित थे, उन्होंने जिज्ञासुओं की समीक्षा कर सैकड़ों ज्ञान पिपासुओं को श्री गुरु महाराज जी का ज्ञानोपदेश देकर कृतार्थ किया। तत्पश्चात् परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के दिव्य दर्शनों की आशा हृदय में संजोए हजारों-हजार प्रेमीभक्त पंडाल में लम्बी-लम्बी कतारों में खड़े होकर उनके

जय-जयकार कर रहे थे। श्री महाराज जी एवं श्री माता जी भव्य मंच पर विराजमान होकर कई घंटे तक प्रेमीभक्तों को दर्शन देते रहे और उनके दुःख-सुख सुन उनका समाधान करते रहे। दर्शनों के पश्चात भजनों से वातावरण को भक्तिभाव से परिपूर्ण कर दिया। हंसज्योति संस्था की ओर श्री मानस स्वाईं ने श्री दिनेश भट्ट और उनके सहयोगी संगीतकारों को अंग वस्त्र ओढ़ाकर स्वागत किया। श्री भट्ट जी यहाँ आकर मनुष्य का लोक-परलोक दोनों ही सुधरते हैं। उन्होंने कहा कि श्री महाराज जी ने इस स्थान को इसीलिए ज्ञान प्रचार का केन्द्र बनाया, क्योंकि यह आस्था का केन्द्र है। यहाँ देश-विदेश से

श्री हंस जयंति के उपलक्ष में ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में 16 व 17 नवम्बर, 2024 को आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में मुम्बई से पधारी प्रसिद्ध गायिका श्रीमती मिस्टू बर्धन भजन प्रस्तुत करती हुई

सभी को लड्डू का प्रसाद दिया गया। श्री महाराज जी एवं श्री माता जी के दर्शन पाकर सभी प्रेमीभक्त बहुत ही आह्लादित थे और अपने आपको धन्य मान रहे थे। उत्तराखण्ड के लोक गायक श्री जितेन्द्र चैहान ने अपने गुरु महिमा, प्रभु महिमा से परिपूर्ण भजन गाकर वातावरण को अध्यात्ममय बनाये रखा।

आगरा से आए भजन गायक श्री सत्यभान जी के भजन गायन के साथ सायंकाल ठीक समय पर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। श्री सत्यभान जी ने भजनों की ऐसी समां बांधी कि सम्पूर्ण पंडाल सद्गुरु महाराज की जय-जयकार कर भक्तिभाव से झूम उठा। तत्पश्चात् राजस्थान से पधारे प्रसिद्ध भजन गायक श्री दिनेश भट्ट ने अपने भक्तिभाव पूर्ण का भजन हुआ और उसके बाद माताश्री मंगला जी ने प्रेमीभक्तों से खचाखच भरे पंडाल को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरिद्वार हरि के घर जाने का द्वार है। यह वही स्थान है जहाँ से चार धाम की यात्रा की शुरूआत होती है। बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम को जाते हैं। यही वह स्थान है, जहाँ संत और सद्गुरु महाराज निवास करते हैं जो आत्म-पिपासुओं को अध्यात्म ज्ञान देकर उस परमतत्व का बोध कराते हैं, हरि के परमधाम तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यहाँ प्रत्यक्ष रूप से पतित पावनी मां गंगा में डुबकी लगाकर अपने शरीर के मैल को धो सकते हैं और सत्संग की निर्मल धारा में गोता लगाकर अपने हृदय के मल को धो सकते हैं। लोग आकर गंगा स्नान और ज्ञान प्राप्त करते हैं। जिज्ञासुओं के उद्धार के लिए ही साधु-संतों और सद्गुरुओं ने इसे अपना निवास स्थान बनाया ताकि सभी मनुष्यों को ज्ञान सहज सुलभ हो सके। कभी जिज्ञासु गुरुओं के पास जाता है तो कभी गुरु जिज्ञासुओं के पास पहुँच जाते हैं, दोनों का ही भाव है कि किसी न किसी रूप से सहज ही जीव का उद्धार हो जाये। श्री माता जी ने कहा कि जब श्री महाराज जी ने हरिद्वार में अपना स्थान बनाया तो भूले-भटके प्रेमीभक्तों को एक स्थान मिल गया और वे यहाँ आने लगे। श्री माता जी ने बताया कि हमने तो उनके दर्शन नहीं किए किन्तु जगतजननी माताश्री राजेश्वरी देवी हमें उनके बारे में बताया करते थे। श्री

महाराज जी के पश्चात श्री माता जी ने इस ज्ञान प्रचार की बागडोर हमने हाथ में थामी और देश-विदेश में अध्यात्म ज्ञान प्रचार को गति प्रदान की। उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व के प्रभाव से अग्रसर और विस्तारित होता जा रहा है। माताश्री मंगला जी सभी संत-महात्मा और प्रेमीभक्तों का आवाहन किया कि सभी इस अध्यात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से समर्पित होकर लग प्रेरणा का कारण है जो इतना विशाल कार्यक्रम करने के बाद भी कहीं कोई गंदगी नहीं, कहीं कोई अव्यवस्था नहीं, कहीं कोई अराजकता नहीं, कहीं कोई उतावलापन नहीं, कहीं कोई मनमानी

श्री हंस जयंति के उपलक्ष में ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में 16 व 17 नवम्बर, 2024 को आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में राजस्थान से पधारे प्रसिद्ध गायक श्री दिनेश भट्ट भजन प्रस्तुत करते हुए

प्रभावित होकर हजारों-हजार युवा स्त्री-पुरुष उनकी शरण में आकर सेवक और संन्यासी बनकर उनकी आज्ञानुसार अध्यात्म ज्ञान प्रचार में समर्पित हो गये। आज उन्हीं की कृपा और तपस्या से सब कुछ सुलभ है। आज अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार भी हो रहा है और उनकी भावना के अनुसार मानव सेवा में भी दिन-प्रतिदिन हमारे कदम बढ़ते जा रहे हैं। आज यहाँ आत्म-जिज्ञासु ज्ञान लेकर अपने जीवन की अज्ञानता को मिटा रहे हैं, वहीं बीमार इलाज कराकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। श्री महाराज जी और श्री माता जी की कृपा और आशीर्वाद से हम लोग हर प्रकार से मानव समाज का कल्याण करने में समर्थ हो रहे हैं, और यह कल्याण का अभियान निरन्तर जायें, यही तुम्हारी आत्मा के उद्धार का हेतु और मानव समाज के भी उद्धार का कारण बनेगी। सामूहिक रूप से आरती वंदना के साथ द्विदिवसीय जनकल्याण समारोह निर्विघ्न रूप से संपन्न हुआ।

इस द्विदिवसीय जनकल्याण समारोह की चर्चा हरिद्वार नगर के जन जन की जवान पर थी। इससे जहाँ हजारों लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ, वहीं हजारों लोगों को यह सीखने को मिला कि किस प्रकार माताश्री मंगला जी और परमपूज्य श्री भोले जी महाराज की एकमात्र संस्था है जो ऊबड़-खाबड़, गंदगी से भरे ऋषिकुल मैदान को साफ-सुथरा बनाकर हरिद्वार की गरिमा को बढ़ाते हैं। यह एक ऐसा आयोजन है जो सम्पूर्ण संस्थाओं के लिए नहीं, कहीं कोई दिखावाबाजी नहीं। इतनी शांति, अनुशासन और गरिमा के साथ यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। किसी को किसी प्रकार की असुविधा प्रदान किए बिना सभी के साथ सामंजस्य और सद्भाव बनाये रखते हुए, सभी को अपने साथ जोड़ते हुए, सभी को खुश और प्रसन्न रखते हुए कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। हरिद्वार के लोगों का कहना है कि इतना विशाल और व्यवस्थित कार्यक्रम इस ऋषिकुल मैदान में केवलमात्र माताश्री मंगला जी और परमपूज्य श्री भोले जी महाराज का ही होता है। इतनी भव्य और सुन्दर व्यवस्था किसी की नहीं होती। यह कार्यक्रम सभी के लिए जीवंत उदाहरण है। ■

-: श्रद्धांजलि :-

बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि महात्मा शिवबोधानंद जी पिछला नाम श्री रमेश चित्रकार पुत्र स्वर्गीय श्री राम भगत चित्रकार निवासी काठमाण्डो नेपाल का 73 वर्ष की आयु में दिनांक 29 नवंबर, 2024 को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आकस्मिक देहावसान हो गया। महात्मा शिवबोधानंद जी ने लगभग 35 वर्ष पहले परमाराध्या जगत जननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी के श्रीचरणों में अपने आपको समर्पित किया। तब से ही वे गुरु दरबार की विभिन्न सेवाओं में पूर्ण मनोयोग से सेवारत रहे। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं परमाराध्या माताश्री मंगला जी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा, भक्ति और प्रेम था। पिछले 10 वर्ष पहले परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी ने उन्हें संन्यास दीक्षा देकर अध्यात्म ज्ञान प्रचार-प्रसार का आदेश दिया। इस अल्पकाल में ही उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों यथा दार्जिलिंग पश्चिम बंगाल, परीक्षितगढ़-मेरठ, बुलंदशहर, मंडी, कांगड़ा व हमीरपुर हिमाचल प्रदेश, पटना बिहार, भवानीमंडी-झालावाड़ राजस्थान, मंदसौर मध्य प्रदेश तथा दिल्ली एनसीआर में अध्यात्म ज्ञान प्रचार में संलग्न रहे। वर्तमान समय में वे दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में ही प्रचार-प्रसार में सेवारत थे। महात्मा जी मूलतः नेपाल के निवासी थे। इसलिए उनकी भाषा हिन्दी और नेपाली मिली-जुली थी। वे इसी सुधुक्कड़ी भाषा में अपने सत्संग से लोगों को भजन-सुमिरण करने, परिवार में मिल-जुलकर रहने, बच्चों को ज्ञान-भक्ति के संस्कार देने तथा गुरु दरबार की सेवा में संलग्न रहने के लिए प्रेरित करते थे। आज वे हमारे बीच भले ही न रहे हों किन्तु उनकी शिक्षाएं और की गयी सेवाएं हम सब गुरुभक्तों को सदैव सेवा भक्ति के लिए प्रेरित करती रहेगी। हम सभी संस्था के सदस्यगण परमाराध्य श्री सद्गुरुदेव जी महाराज, श्री माता जी एवं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति और शांति प्रदान करें। दिवंगत आत्मा को हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि। ओम शांतिः! शांतिः!! शांतिः!!!

- हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली

महात्मा शिवबोधानंन्द जी
(जन्म: 01.01.1951 | ब्रह्मलीन: 29.11.2024)

-: श्रद्धांजलि :-

बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि महात्मा आदर्शानंद जी पिछला नाम श्री जयराम पाटीदार पुत्र स्वर्गीय श्री मोतीराम माता का नाम स्वर्गीय श्रीमती चित्रादेवी निवासी ग्राम रमणगाँव जिला खरगोन मध्य प्रदेश का 59 वर्ष की आयु में दिनांक 2 दिसम्बर, 2024 को एक निजी अस्पताल में देहावसान हो गया। महात्मा जी पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे, इसलिए उनका एक निजी अस्पताल में उपचार चल रहा था। महात्मा श्री आदर्शानंद जी ने लगभग 40 वर्ष पहले परमाराध्या जगत जननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी के श्रीचरणों की शरणागति ग्रहण की, तब से ही वे विभिन्न आश्रमों में अनेकानेक सेवाओं में पूर्ण निष्ठा के साथ समर्पित रहे। वे बड़े ही कर्मठ, निष्ठावान और भजन-भक्ति करने वाले स्वभाव के थे। सभी के प्रति उनका सदाचारपूर्ण व्यवहार था। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं परमाराध्या माताश्री मंगला जी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और विश्वास था। पिछले दो वर्ष पहले परमपूज्य श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी ने उन्हें संन्यास देकर अध्यात्म ज्ञान प्रचार-प्रसार की सेवा सौंपी। तब से वे हरदोई, सीतापुर आदि क्षेत्रों में पूरी लगन के साथ दिन-रात सत्संग-प्रचार में समर्पित रहे। अध्यात्म ज्ञान प्रचार की उनकी इतनी अधिक लगन थी कि इसमें उन्होंने अपने स्वास्थ्य को भी आड़े नहीं आने दिया। महात्मा आदर्शानंद जी की सेवा-भक्ति हम सब भक्तों को सदैव प्रेरित करती रहेगी। हम सभी संस्था के सदस्यगण परमाराध्य श्री सद्गुरुदेव जी महाराज, श्री माता जी और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शांति प्रदान करें। दिवंगत आत्मा को हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि। ओम शांतिः! शांतिः!! शांतिः!!!

- हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली

महात्मा आदर्शानंद जी
(जन्म: 01.01.1966 | ब्रह्मलीन: 02.12.2024)

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण, प्रचारकों, श्री हंसलोक सेवकों, कार्यकर्ताओं एवं प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि आगामी नववर्ष-2025 में अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप सब अपने गाँव/क्षेत्र में **"हंसलोक संदेश"** मासिक पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका अध्यात्म ज्ञान प्रचार का स्थाई माध्यम है। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में स्थान-स्थान पर आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही जनकल्याण समारोहों के सुन्दर-सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा माता जी/महाराज जी के कार्यक्रमों की सूचना, संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, जनकल्याण से सबंधित गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न सेवा उपक्रमों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

अतः नववर्ष-2025 में सभी संकल्प लें कि कम-से-कम 10 व्यक्तियों तक हंसलोक संदेश पत्रिका अवश्य पहुचाएंगे। आपका यह प्रयास अनेकानेक व्यक्तियों के हृदय में आत्म-जिज्ञासा का बीज रोपित करेगा। प्रेमी भक्तों/पाठकों को ज्ञात हो कि संस्था के सभी प्रचारक महात्मा/बाईगण तथा सेवकों के पास भी पत्रिकायें रहती हैं। आप उनसे हंसलोक संदेश पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी–भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोटः– (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय पाठक का पेन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर रसीद पर अवश्य लिखें।

(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।

(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पेन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं.–9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य- एक प्रति- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पताः-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,
नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेषः- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। **-सम्पादक**

अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस - 3 दिसम्बर, 2024
ऋषिकेश, उत्तराखण्ड

ऋषकेश, उत्तराखण्ड। **अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस - 3 दिसम्बर, 2024** के अवसर पर द हंस फाउंडेशन के प्रेरणास्रोत परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी ने अपने कर कमलों द्वारा अमेरिकन स्कूल ऑफ पेरिस के सहयोग से बने नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर ज्योति स्पेशल स्कूल, ऋषिकेश एवं श्री भरत मंदिर स्कूल सोसाइटी के प्रबंध समिति के सदस्य एवं पदाधिकारीगण उपस्थिति थे। संस्था के दिव्यांग बच्चों ने अनेक प्रकार की खेल-कूद प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। सभी बच्चों को उनके अनूठे प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत किया गया।

मकर संक्रान्ति की हार्दिक शुभकामनाएं!

सूर्य का मकर राशि में प्रवेश यानी मकर संक्रान्ति दान, पुण्य एवं स्नान की पावन तिथि है, इसे देवताओं का दिन भी कहा जाता है। इसी दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। अंधकार का नाश व प्रकाश का आगमन होता है। इस दिन दान, पुण्य, जप, धार्मिक अनुष्ठानों तथा गंगा स्नान का अनन्य महत्व है। हमारा जीवन भी मकर संक्रान्ति की तरह गुण और दोष से युक्त है। हमें सद्गुरु प्रदत्त ज्ञान गंगा में ध्यान-सुमिरण का स्नान कर स्वयं को पवित्र करना होगा, तभी हृदयाकाश में ज्ञान का सूर्य उदित होगा। यही मकर संक्रान्ति मनाने का मुख्य उद्देश्य है। मकर संक्रान्ति की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं! **- श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी**

You Tube

आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।